ॐ

श्री गुरवे शिवाय नमः

पाठ्य संग्रह

(Anthology of Holy Shaive Scriptures)

(श्री स्वामी विद्याधर सङ्कलित त्रिकमत् सम्बन्धित विभिन्न ग्रन्थों के श्लोक शब्दार्थ तथा भावार्थ सहित)

प्रकाशक ।

श्री स्वामी विद्याधर

स्वामी महादेव शैव आश्रम

पलौड़ा, जम्मू

श्री गुरवे शिवाय नमः

पाठ्य संग्रह

(Anthology of Holy Shaive Scriptures)

(श्री स्वामी विद्याधर सङ्कलित त्रिकमत् सम्बन्धित विभिन्न ग्रन्थों के श्लोक शब्दार्थ तथा भावार्थ सहित)

हिन्दी रूपान्तकार

विश्वनाथ जोत्षी (भट्ट)

प्रकाशक :

श्री स्वामी विद्याधर

स्वामी महादेव शैव आश्रम

पलौड़ा, जम्मू

प्रथम संस्करण—300
द्वितीय संस्करण—500

द्वितीय संस्करण में पिछली त्रुटियों को शुद्ध करने का प्रयास किया गया है तथा कुछ नए वेद श्रुतियां अर्थ सहित भी लगाए गए हैं। भक्त जनों के अनुरोध पर प्रस्तुत है।

Dt. 12-4-2002 (Navratra)

दो शब्द

त्रिकदर्शन प्रतिपादित आणवोपाय, शाक्तोपाय तथा शाम्भवोपाय में कोई भी अकेला एक उपाय साधक को समावेश की स्थिति तक नहीं पहुंचा सकता। यह उपाय केवल मलत्रय प्रक्षालन में समर्थ होते हैं। मलत्रय मुक्त साधक ही अनुग्रह का पात्र बनता है। यदि किसी एक ही उपाय से आत्मसाक्षात्कार हो सकता है तो वह केवल अनुपाय ही है। वस्तुतः यह कोई उपाय नहीं अपितु गुरु का अनुग्रह होता है। गुरु कृपा से ही सद्यः आत्मसाक्षात्कार होता है।

गुरु-कृपा की पुण्य प्रसंग वाली कई गुरु-शिष्य परम्पराएँ कश्मीर में पुरातन काल से चलती आई हैं। इन्हीं में श्रीराम जी महाराज की परम्परा में स्वामी विद्याधर जी और फिर स्वामी महादेव काक जी भी हुए हैं। सामान्य दिखने वाले परन्तु आसामान्य जीवन जीने वाले स्वामी महादेव काक जी अपने शिष्यों को अनुग्रह का पात्र बनाने के लिए त्रिकदर्शन के ग्रन्थों के अध्ययन की और प्रेरित करते थे। वे आणवोपाय आदि से निहित श्लोकों का उपदेश दिया करते थे। उन्हीं त्रिकदर्शन के गूढ़ रहस्यों से पूरित श्लोकों का अब तक केवल मौखिक पाठ हुआ करता था। लेकिन भाषण की अपेक्षा अर्थ सहित लेखन स्थायी और प्रभावकारी होता है इसी कथ्य को विचार कर स्वामी महादेव काक के कृपापात्र शिष्य श्री विश्वनाथ जी ने उन श्लोकों का हिन्दी अनुवाद करके एक प्रशंसनीय कार्य किया है। इस पुस्तक में अनूदित श्लोकों के शब्दार्थ तथा भावार्थ के साथ उन्होंने पूर्ण न्याय किया है।

परमार्थ के अन्वेषण में 'अर्थ' से अर्थ की ओर आने वाले श्री विश्वनाथ जी की यह प्रयास सराहनीय एवं साहस अनुकरणीय है। उनका यह श्रमसाध्य कार्य अपने गुरु के प्रति सश्रद्ध एव विशुद्ध भावनाओं के प्रशान्त प्रवाह का द्योतक है। निःसन्देह पाठक इस से लाभान्वित होगा एवं स्वरूप साक्षात्कार के प्रति प्रेरित होगा।

डा० जय कृष्ण शर्मा

प्राक्कथन

शैवशास्त्र का मूल स्थान कश्यप ऋषि की सुरम्य भूमि अर्थात् कश्मीर रही है। यहां ही त्रिकमत् के आचार्यों ने जन्म लिया है तथा इस अद्वैत मार्ग के ग्रन्थ लिखकर शैवमत को आगे बढ़ाया।

समय की गति, दूसरे मत मतान्तरों के जन्म लेने से तथा प्रतिकूल परिस्थियों के कारण इस आदि सिद्धान्त को सुव्यवस्थित ढंग से विकसित होने का अभाव रहा है। परन्तु कहा जाता है कि लोक उपकार तथा उद्धार के लिए स्वयं भगवान महादेव जी ने श्री कण्ठनाथ जी का अवतार धारण किया और इस रूप से श्री दुर्वासा महर्षि जी को कैलास पर्वत पर इस सिद्धान्त का उपदेश दिया और उन्हें इस के प्रचार का आदेश दिया। महर्षि दुर्वासा ने तीन मानस पुत्र तथा शिष्य श्री त्रिम्बकादित्य, अमरकादित्य और श्री नाथादित्य उत्पन्न किए। इन तीनों ने क्रमश: अद्वैदवाद, द्वैतवाद, **द्वैताद्वैतवाद** का प्रचार किया।

श्रीं त्रिम्बकादित्य की शाखा के अन्तिम सिद्ध (Perfect being) ने गृहस्थ धारण किया और सङ्गमादित्य को जन्म दिया। यह सङ्गमादित्य घूमते घूमते काश्मीर पहुंचे तथा यहां ही निवास किया। इसके वंश से श्री सोमानन्द जी उत्पन्न हुए जिन्होंने अमूल्य ग्रन्थ 'शिव दृष्टि' लिखी। इन को त्रिकमत का आदि गुरु कहा जा सकता है।

श्री वसुगुप्ताचार्य (8th Century) के शिष्य श्री सोमानन्द जी बतलाए जाते हैं। श्री वसुगुप्ताचार्य को महादेव गिरि के नीचे एक बड़े पत्थर पर शिवसूत्र लिखे मिले जो आजतक भी "शंकर पल" के नाम से प्रसिद्ध है।

श्रीमन्महादेवगिरौ वसु गुप्त गुरोः पुरा
सिद्धादेशात्प्रादुरा सञ्शिवसूत्राणि तस्य हि

(शिवसूत्रवार्तिक)

श्री सोमानन्द जी के शिष्य श्री उत्पलदेवाचार्य (9th century) थे। इन्होंने ही ईश्वर प्रतिभिज्ञा, शिवस्तोत्रावली इत्यादि ग्रन्थ लिखे। इनके शिष्य श्री लक्ष्मणगुप्ताचार्य थे जिनके शिष्य त्रिक्मत के महान आचार्य श्री अभिनवगुप्त थे। अभिनवगुप्त की कृतियों में '१) तन्त्रालोक २) मालिनी विजय - वार्तिका ३) परा त्रिंशका ४) परमार्थसार ५) क्रमस्तोत्र ६) भैरवस्तोत्र इत्यादि प्रसिद्ध हैं। श्री अभिनवगुप्त के प्रधान शिष्य श्री क्षेमराज जी थे। इन की कृतियों में १) प्रतिभिज्ञाहृदय २) पराप्रावेशिका ३) स्पन्द संदोह: ४) शिवसूत्र विमर्शनी इत्यादि उपलब्ध हैं। श्री क्षेमराज के शिष्य श्री योगराज थे। कई लेखकों का विचार है कि दोनों श्री अभिनवगुप्त आचार्य के शिष्य थे। श्री योगराज जी ने परमार्थसार की टीका की है। श्री उत्पलदेवाचार्य का समय नवीं शताब्दी (अवन्तीवमर्ण का राज्य) माना जाता है। तथा अभिनवगुप्त और क्षेमराज, योगराज का समय क्रमश दसवीं और ग्यारवीं शताब्दी है।

कश्मीर शैव दर्शन या त्रिक् दर्शन में तीन उपायों शाम्भव, शाक्त और आणव को साधना का आधार मानकर स्वस्वरूप लाभ का स्रोत माना गया है। शैवदर्शन के इन तीन उपायों में शाम्भव उपाय को प्रधान मानकर भिन्न-भिन्न ग्रन्थों में समझाया गया है।

शाम्भव उपाय

चितशक्ति में इच्छा, ज्ञान तथा क्रिया शक्तियां विद्यान हैं। इच्छा शक्ति तुर्या अवस्था द्वारा चैतन्य आत्मा से भिन्न न होने के उपाय को शाम्भव उपाय कहते हैं (प्रकाश—विमर्श)

शाक्त उपाय

शाक्त उपाय अथवा शाक्त समावेश एक ऐसी अवस्था है जिसके द्वारा मन तथा बुद्धि पूर्ण रूप से एक्यभाव प्राप्त कर आत्मा के साथ लय हो (अहं - इदं)

आणव उपाय

आणव उपाय में आत्मा के साथ विलय उच्चार, कारण, ध्यान, वर्ण और स्थान कल्पना द्वारा प्राप्त किया जाता है (पान - अपान)

(The experience that the world is the embodiment of Shiva is known as Shambhava upaya)

(The Shakht upaya is the process by which the mind and intellect completely merge into the inner self)

(The anava upaya is dualistic as also non-dualistic path because it leads to unity. It involves the use of body, mind, intellect, senses and prana shakti. By pursuing the knowledge of the truth through Japa, meditation a person becomes one with Shiva and attains peace of mind)

उभयपट्टोद्घट्टनान्महाशून्यता प्रवेश:

(वातूलनाथ - सूत्र-३)

दोनों पट पान - अपान (आणव उपाय) अहं - इदं (शाक्त उपाय) प्रकाश - विमर्श (शाम्भ उपाय) ज्ञान - क्रिया; प्रमाता - प्रमीय इकट्ठे खुलने से (जानकारी रखने से) महा अशून्यता अथवा पूर्णता में प्रवेश कर सकता है (अर्थात् शिव अवस्था का भास होता है)

त्रिक का अर्थ त्रिमूर्ति (Trinity) है। साधक को यह सब चराचर जगत तीन रूपों में समझना चाहिए। परमेश्वर जीव तथा इन दोनों को मिलाने वाली शक्ति।

स्वातन्त्र्य स्वभाव रखने वाला शिव है (Supreme Reality) इस में कोई परिवर्तन नहीं होता। इसमें चित्, आनन्द, इच्छा, ज्ञान,

क्रिया (Divine consciousness, divine bliss, divine will, divine cognition, divine Act) विद्मान हैं।

जिस प्रक्रिया से शिव सृष्टि को प्रकट करने की इच्छा रखता है उसे शक्ति कहते हैं। यह आनन्द, इच्छा, ज्ञान क्रिया स्वरूप है। जब परमेश्वर शक्ति के बल से वास्तविक चित्स्वरूप को ढांप कर संकोच ग्रहण करता है तो जीवरूप नर कहलाता है।

> "स चैको द्विरूपस्त्रिमयश्चतुरात्मा सप्त पञ्चक स्वभावः" (प्रतिभिज्ञाहृदयम्)

वह चिदात्मा यद्यपि एक है। वह दो तीन चार स्वरूप वाला तथा वह सात पांच या पंतीस स्वभाव वाला भी है।

१ एक

चित् आत्मा एक है।

२ दो

अपनी स्वतन्त्रता से परिपूर्ण प्रकाशमान तथा प्राण आदि संकोच गृहण करके जीव भाव भोगता है इसलिए दो स्वरूप वाला है।

३ तीन

तीन मलों (आणव मायीय, कार्म) के आवरण में होने के कारण तीन रूप वाला है।

i) आणव मल

अपूर्ण—देहाभिमान

Impurity is the basic ignorance which is responsible for obscuring our true nature from us.

ii) <u>मायीय मल</u>

भेदमय—भेदप्रथा

Maya Mala is responsible for differentation between the self and the environment.

iii) <u>कार्ममल</u>

पुण्य पाप की वासना अर्थात् वासनामय

This mala is responsible for differentiation in virtue and vices, favours & frowns or the likes and the dislikes

४ चार

i) शून्य (Void)
ii) शरीर (Gross body)
iii) प्राण (Vital force)
तथा
iv) पुर्यष्टक (Subtle body) (मन, बुद्धि, अहंकार, शब्द, स्पर्श, रूप, रस गन्ध)

५ सात

शिव, मन्त्रमहेश्वर, मन्त्रेश्वर, मन्त्रः, विज्ञानाकल, प्रलयाकल, सकल यह सात रूपों वाला है।

६ इसी प्रकार चित् के स्वभाव पांच हैं :-

चित् (Divine Consciousness)
आनन्द (Divine bliss)
इच्छा (Divine will)
ज्ञान (Divine Cognition)
क्रिया (Divine Act)

७ पन्तीस

पृथ्वी से लेकर ऊपर शक्ति तक पन्तीस तत्त्वों से पूर्ण शिव ही है।

जब एक ही स्वभाव के रूप में केवल शिव ही को जाना जाए तो मुक्ति मिलती है।

Siva = Highest Reality.

Sakti = His energy (means of emanation)

Jiva (Nara) = Limited individual.

त्रिक् सिद्धान्त की साधना पद्धति में मनुष्य प्राकृतिक स्वभाव को शक्ति द्वारा अपने संकुचित स्वभाव से उठकर ऊपरी शिव पद्धवी को पा सकता है।

> "विश्वोत्तीर्णं विश्वमयं च,
> इति त्रिकादि दर्शन विदः"

(प्रत्यभिज्ञाहृदयम्)

बहुत समय पश्चात् इस अद्वैत विद्या के प्रसिद्ध योगीश्वर श्री ईश्वर स्वामिपाद हुए हैं। उन्होंने ही अपने भतीजे श्री स्वामी राम जी महाराज को इस अनुत्तर त्रिक्मत के सिद्धान्त का उपदेश किया। स्वामी श्री राम महाराज का जन्म १९१० में हुआ तथा १९७१ विक्र० में शिवधाम पधारे।

श्रीराम जी की शिष्य मण्डली में से श्री स्वामी विद्याधर जी महाराज ने अपने वैराग्य, तपोबल तथा बुद्धि कुशलता से त्रिक् सिद्धान्त में अनुत्तर पद प्राप्त किया। श्रीमान जी १९४२ विक्रमी की आषाढ़ शुक्ल पक्ष त्रयोदशी के दिन उत्पन्न हुए तथा २००६ विक्र० की मार्ग शुक्ल पक्ष तृतीया के दिन अन्तरध्यान हुए। श्री स्वामी विद्याधर जी का जीवन एक विरक्त, जाज्वल्यमान, स्वतन्त्र, अनुत्तरानन्दमय

स्वरूपसमावेश युक्त तथा समाज सुधारक का जीवन्त उदाहरण रहा है। वही आधुनिक समय के महात्मा थे जिन्होंने श्रीनगर शहर के अतिरिक्त गांव - गांव में शैव (त्रिक्) सिद्धान्त का प्रचार करके लोगों का उपकार किया है। उन्होंने कश्मीर मण्डल के सब पवित्र स्थानों में भ्रमण किया तथा बहुत से बनों में स्वात्मविमर्श की साधना की। इन स्थानों में कार्कूटनाग, अमरनाथ गुफा, गणेशबल, कांठसू, थर्जीवारा, बिजबिहारा, अनन्तनाग, मटन, शोपयान (कपाल मोचन) रत्नीपोरा, मंज़गाम (राज्ञा भगवती) त्राल, श्रीनगर के अनेक स्थान, क्षीरभवानी, महादेव गिरि, खिव, खुनमुह इत्यादी वर्णन के योग्य है। उन्होंने संस्कृत भाषा में गुरुस्तुति, निर्वाण विलाप, श्री सरस्वती स्तोत्र, श्री कालिका स्तोत्र, श्री महाराज्ञा स्तोत्र इत्यादि रचे हैं। संस्कृत भाषा में रची हुई इन कृतियों ने शैव सिद्धान्त में अपनी सत्ता बना रखी है। आजकल भी अनुकूल परिस्थियों के अभाव के होते हुए बहुत से कश्मीरी पण्डितों के घरों में भगवत भक्ति, सत्संग तथा धर्म परायण होने का श्रेय श्री स्वामी विद्याधर जी की अनुकम्पा का योगदान है।

हसंस्थिता सकल शब्दमयी भवानी
वाग्वादिनी हृदय पुष्कर चारिणीया
हंसीव हंस रजनीश्वर वह्नि नेत्रा
राज्ञी सदा भगवती भवतु प्रसन्ना

या सोम सूर्य वपुषा सततं सरन्ती
मूलाश्रयात्तडिदिवाऽऽ विधिरन्ध्रमीढ्या
मध्यस्थिता सकल नाडि समूह पूर्णा
राज्ञी सदा भगवती भवतु प्रसन्ना

(राज्ञा स्तोत्र)

अर्थ

"हंस पर स्थित जो शब्द रूपी भवानी है, जो सर्ववाक् रूपी तथा हृदय कमल में विचरण करती है, हंसिनी जैसे सूर्य चन्द्रमा (इड़ा पिंगला) नेत्रों वाली है ऐसी ही राज्ञा भगवती (हम पर) प्रसन्न रहे (अनुग्रह करती रहे)

जो मूलाधार स्थान से सदा सूर्य चन्द्रमा (प्रान - अपान) रूपी बिजली जैसी ब्रह्मरन्द्र तक कडकती है तथा सब नाडीसमूह के मध्य में ठहरी हुई (सुशम्ना) है ऐसी ही राज्ञा भगवती हर समय हम पर प्रसन्न रहे।

ऐसे ही उद्‌गार श्री स्वामी विद्याधर जी के पूर्ण सिद्ध होने तथा वाक्सिद्धि प्राप्ति के उदाहरण हैं।

श्री स्वामी विद्याधर जी की शिष्य मण्डली में दो महानुभावों का वर्णन आवश्यक है। एक डाक्टर सूर्यकण्ठ और दूसरे स्वामी महादेव काक रत्नीपोरा। डाक्टर साहिब चूंकि कर्ण नगर स्थित स्वामी विद्याधर आश्रम श्रीनगर के समीप ही रहते थे इसलिए उन्होंने आश्रम का कार्यभार सम्भाला तथा शैव सिद्धान्त की पुस्तकों का पठन - पाठन नित्यनियम से कराते रहे।

स्वामी महादेव काक का जन्म २९ जेष्ठ १९४९ विक्र० में हुआ तथा २१ कतक २०३० विक्र० को शिवधाम प्रस्थान किया। बाल ब्रह्मचारी होने के साथ साथ उन्होंने गृहस्थ धर्म का पूर्ण रूप से पालन किया तथा पटवारी के पद से निवृत्ति पाकर अलग आश्रम में रहने लगे। यहां पर स्वात्म विमर्श के साथ - साथ सत्संग, शैव सिद्धान्त का अध्ययन हुआ करता था। उनके जीवन काल का वर्णन गुरु स्तुति (श्री महादेव आश्रम रत्नीपोरा से प्रकाशित) में किया गया है। उन्होंने परा शक्ति के अनुग्रह से शिवभक्ति से पूर्ण कश्मीरी कविताओं की रचना की है।

१) चरनन् ब् च्यान्यन सूमरय
चन्द्र शेखरय म्यान सत् गुरय

नाम रूप रस्ति श्याम सुन्दरय
चन्द्र शेखरय म्यान सत् गुरय......
सदरस छु तरणुक साज़ बाज़
सत्गुरु सुपरया छु जहाज़
तत्पर च रोज़ निर आसरय

चन्द्र०......

मन नाव प्राणच वावमाल
चित के निवेशन सुय सम्भाल
वृच़ गाल मंज़ मा लगय दरय

चन्द्र०.. ...

मन्ज़ युद वुज़ि संकल्प वाव
शमराव दम लंगर च तराव
चञ्चल स्वभाव त्राव बनथ्यरँ

चन्द्र०......

सुविचार अन्धकार दूर गौव
वुछ पोत पकवन्य त्राव रव
मम रठ त गम त्राव दिव वोरय

चन्द्र०... .

२) बनि क्या तस यस न अन्तरगत गौव
हृनि हृनि मीलिथ छु चित् भैरव

धन्यावाद तस यस अज़लय प्रजल्यव
हनि हनि०......

प्रकाश विमर्श यति गौव रव
नादबिन्द रूप शक्ति यामल सुय गौव
स्वविमर्श बल सततं तति कन थव
हनि हनि०... ..

जड़ चेतन तन मन धन अर्पण
कर भगवानस बन आनन्द घन
स्वातंत्रस रोज़ हसंस कण थव
हनि हनि०......

होश पोस नूल रोष चाव पोश वारे
गोश गोश फ्यूर सयत् ह्‌यथ वन हारे
नीर पोशन व्यूर तुलान पांचव मुखव
हनि हनि०......

सत गुर मुख आमनाय अवलम्बन
दारिथ कर घरि घरि परिशीलन
सत् च्यत् आनन्द स्वभाव अनुभव
हनि हनि०......

ये स्वामी महादेव काक की कृतियों में से कुछ अंश हैं जिससे उनकी स्वात्म दर्शन की सफलता का स्पष्ट संकेत मिलता है। सर्वभाव से स्वतन्त्रात्मा बनना ही मोक्ष है। और मोक्ष की परिभाषा श्री तन्त्रा

लोक में ऐसे कही है :-

मोक्षो हि नाम नैवान्यः
स्वरूप प्रथनं हिसः
स्वरूपं चात्मन. संवित्......

मोक्ष और कोई चीज़ नहीं है स्वतन्त्र स्वरूप का साक्षातकार ही मोक्ष है। जो स्वातन्त्र स्वरूप अपनी ही संवित् है।

सर्वोत्तीर्णं रूपं सोपान पदक्रमेण संश्रयतः
पर तत्त्व रूढि लाभे पर्यन्ते शिवमयो भाव
(परमार्थसार)

By climbing step by step the yogi finally reaches the highest stage of oneness with Shiva.

स्वामी विद्याधर जी के समय से उनके शिष्यों की एक परम्परा रही है कि सायंकाल के समय एक स्तवन किया जाता है। इन स्तवनों का संग्रह एवं संकलन करके एक पाठ-पुस्तिका के रूप में श्री स्वामी जी के जीवन काल में ही छपी थी। यह स्तवन शैव सिद्धान्त के निम्न-लिखित मूल ग्रन्थों के अंश हैं।

१) श्रीमद् भगवद् गीता
२) परा प्रावेशिका
३) परमार्थसार
४) शिवस्तोत्रावली
५) क्रम स्तोत्र
६) पञ्चस्तवी
७) स्वयं स्वामी जी के रचे हुए श्लोक
८) उपनिषद्

९) प्रतिभिज्ञाहृदयम्

१०) साम्ब पाञ्चशिका

११) सपन्द तत्त्व

१२) सौंदर्य लहरी

१३) श्री तन्त्रालोक

१४) परात्रिंशिका

१५) स्तवचिन्तामणि

१६) स्तुति कुसुमाञ्जलि......इत्यादि

चूंकि यह सब श्लोक संस्कृत में हैं और मुझ जैसे साधारण मनुष्य के लिए आजकल के समय में (जब संस्कृत भाषा कश्मीर में लुप्त सी हो गई है) ऐसी पुस्तकों को तथा ऐसे श्लोकों को समझना और समझाना दुष्कर है क्योंकि इन का अध्ययन तथा मनन केवल गुरु परम्परा से ही सफल तथा उचित रहता है। अतः गुरुमुख से जो कुछ भी बहुत पहले समझ सका हूं उसको आधार बनाकर यथा सामर्थ्य इस पुस्तिका का हिन्दी में अनुवाद करने का प्रयास तथा साहस किया है। इन श्लोकों का पद् अनुवाद केवल समझने के लिए साधारणतया किया है जिससे उन मुमुक्षयों की लालसा पूरी हो जो इन श्लोकों का अर्थ समझना तो चाहते हैं किन्तु संस्कृत भाषा का पूरा ज्ञान नहीं रखते हैं। आचार्य यास्क ने भी निरुक्त (१/८) में कहा है :

स्थाणुरयं भारहारः किलाभूदधीत्य
वेदं न विजानातियोऽर्थम्
योऽर्थज्ञ इत्सकलं भद्रमश्नुते ।

जो मन्त्र का मात्र स्वरपाठ करके अर्थ नहीं जानता वह जैसे वृक्ष, फल, फूल, पत्ते, डाली और अन्य पशु धान्य आदि का भार उठाता है जैसे भारवाह अर्थात् भार का उठाने वाला। और जो पढ़ता है तथा

उनका यथावत् अर्थ जानता है वही सम्पूर्ण आनन्द को प्राप्त करता है।

अतः भगवान् की पहचान होती हैं शास्त्र से और शास्त्र का अनुभवात्मक ज्ञान होता है गुरु से। शास्त्र ज्ञान से विषयज्ञान का विलय हो जाता है। परन्तु योग्य गुरु के सम्पर्क से ही समावेशात्मक आनन्द लाभ का सुख मिलता है।

त्रिमलक्षालिनो ग्रन्थाः सन्ति तत्पारगांस्तथा
योगिनः पण्डिताः स्वस्थास्त्वद्भक्ता एव तत्त्वतः
शिवस्तोत्रावली (१५/१)

हे प्रभु ! वास्तव में आप के भक्त ही (समावेशात्मक) आनन्द उठाने के लिए स्वस्थ (सुखी) रहते हैं (नहीं तो) तीन मलों को (आणव, मायीय, कार्म) धो डालने वाले ग्रन्थ और उन ग्रन्थों या शास्त्रों के पारंगत योगी तथा ज्ञानी वहुत मिलते हैं।

भवदीय गम्भीर भाषितेषु
प्रतिभा सम्यगुदेतु मे परोऽस्तः।
तदनुष्ठित शक्तिरप्यतस्त
त्वदर्चाव्यसनं च निर्विरामम् ।।
शिवस्तोत्रावली (१२/२३)

हे भगवान् ! आपके रहस्य पूर्ण वाक्यों में मेरी बुद्धि अच्छी प्रकार उद्धित हो जावे अर्थात् सफल हो जाए उसके बाद उन रहस्यमय वाक्यों (शास्त्रों) के अनुसार कार्य करने की शक्ति (प्राप्त हो) फिर आपकी पूजा अर्थात् समावेश में व्यस्त रहने की भावना लगातार उद्धित होती रहे।

यदि इस प्रयास में कहीं अशुद्धता हो या त्रुटि हो तो कृपया वहां संशोधन करने की कृपा करें क्योंकि सज्जनों का कार्य यही होता है।

हसन्ति दुर्जनास्तत्र
समाधयन्ति सज्जनः।

इति शिवम् विश्वनाथ

श्री गणेशाय नमः

आनन्दमानन्द करं प्रसन्नं ज्ञानस्वरूपं निजबोध युक्तं
योगीन्द्रमीढ्यं भवरोग वैद्यं श्री सद्गुरुं नित्यमहं नमामि
श्रीमत्परं ब्रह्म गुरुं नमामि श्रीमत्परं ब्रह्म गुरुं भजामि
श्रीमत्परं ब्रह्म गुरुं वदामि श्रीमत्परं ब्रह्म गुरुं श्रयामि ।

शब्दार्थ

आनन्दम्	— अपार सुखों के	श्रीमत्	— उत्तम
आनन्द	— सुख (Bliss)	परंब्रह्म	— परंब्रह्म के समान
करं	— कराता है	गुरुं	— गुरु को
प्रसन्नं	— प्रसन्नता (जो)	नमामि	— नमन करता हूं
ज्ञान	— ज्ञान	श्रीमत्	— श्रीमान
स्वरूपं	— स्वरूप है (जो)	परंब्रह्म	— परंब्रह्म के समान
निजबोधयुक्तं	— आत्मबोध से युक्त	गुरुं	— गुरु को
योगीन्द्रम्	— योगेन्द्रयों से जो	भजामि	— भजता हूं
इढ्यं	— पूजा जाता है	श्रीमत्परंब्रह्म	— श्री शिवस्वरूप
भवरोग	— संसारिक रोगों का		
वैद्यं	— वैद्य है (जो)	गुरुं	— गुरुदेव को
श्रीसद्	— ऐसे श्रेष्ट	वदामि	— विनती करता हूं
गुरुं	— गुरु देव को	श्रीमत्	— श्रीमान
नित्यं	— नित्य	परंब्रह्म	— प्रभुसमान
अहं	— मैं	गुरुं	— गुरु को

नमामि	— प्रणाम (नमन) करता हूं।	श्रयामि	— आश्रय लेता हूं।

भावार्थ

मैं उस गुरुदेव को जो श्रेष्ट है, परंब्रह्म के समान है, शिवस्वरूप है को नित्य नमन करता हूं। भजता हूं। विनती करता हूं। उसी का आश्रय लेता हूं तथा जो अपार सुखों का सुख (समावेशात्मक सुख) **(total absorption)** देता है। ज्ञान स्वरूप है आत्म बोध[1] से युक्त है योगेन्द्रयों से पूजा जाता है। संसारिक रोगों[2] (दुखों) का वैद्य है अर्थात् परम शिव **(Highest Reality)** से मिलाने की व्यवस्था का उपाय करता है मार्ग दिखाता है।

---

1) Spiritual awakening

2) Transmigatory existence

अगाध संशयाम्भोधि समुत्तरण तारिणीम
वन्दे विचित्रार्थ पदां चित्रां तां गुरु भारतीम्

शब्दार्थ

अगाध	— अत्यन्त गहरे	पदाम्	— पदों युक्त
संशय	— सशंयरूप	चित्राम्	— आश्यर्यजनक
अम्भोधि	— सागर	तां	— उस
समुत्तरण	— पार करने वाली	गुरु	— गुरु देव को
तारिणीम	— नौका		
वन्दे	— नमस्कार करता हूं	भारतीम्	— वाणी को
विचित्र	— अलौकिक		
अर्थ	— अर्थो (और)		

भावार्थ

अत्यन्त गहरे संशय रूप सागर को पार कराने वाली नौका के रूप में श्री गुरुदेव की उस (परा)[1] वाणी को नमस्कार करता हूं जो अर्थों[2] और पदों[3] से युक्त है और आश्चर्य जनक है।

---

1) Supreme form of speech in seed form from which पश्यन्ती (अव्यक्त) मध्यमा (व्यक्तायक्त) तथा वैखरी (व्यक्त) emanate

2) अर्थ—क्रिया शक्ति (Power of divine action) वाच्य—object When इच्छा शक्ति (Power of divine will) unfolds it manifests ज्ञान शक्ति and क्रिया शक्ति)

3) पद—ज्ञान शक्ति (Power of divine cognition) वाचक—Word.

अनाद्यायाखिलाद्याय मायिने गतमायिणी
अरूपाय सरूपाय शिवाय गुरवे नमः

शब्दार्थ

अनादि	— आद्यरहित	अरूपाय	— निराकार
या	— जो	सरूपाय	— साकार
अखिल	— समस्त (का)	शिवाय	— शिवरूप
आद्य	— आद्य है	गुरु वे	— गुरु को
मायिने	— मायामय	नमः	— नमस्कार करता हूं
गत	— परे		
मायिने	— माया से		

भावार्थ

जो आद्यरहित है। समस्त (जगत) का आद्य है। मायामय होते हुए भी माया से परे हैं। निराकार हैं। तथा साकार भी है ऐसे शिव रूप श्री गुरु' को नमस्कार करता हूं।

---

1) गुर्र्वा पारशेश्वरी अनुग्राहिका शक्ति (S.S.V. 2 - 6)
(The Guru is the grace bestowing power of God)

आब्रह्मस्तम्भ पर्यन्त यस्य में गुरु सन्तति
तस्य में सर्वशिष्यस्य को न पूजो मही तले

शब्दार्थ

आ	— आरम्भ करके	तस्य	— इसलिए उसका
ब्रह्म	— ब्रह्मा से	मे	— मुझे
स्तम्भ	— खम्बा	सर्व	— सबों (का जो)
पर्यन्तं	— तक	शिष्यस्य	— शिष्य हूं
यस्य	— जो	को	— कौन
मे	— मुझे	न	— नहीं
गुरु	— गुरु	पूज्यो	— पूजन के योग्य
सन्तति	— परम्परा	महीतले	— पृथ्वी पर

भावार्थ

ब्रह्मा से आरम्भ करके एक (स्थूल) खम्बे तक मुझे सब गुरु की सन्तति ही दिखाई देती है इस तरह सबों का शिष्य होने के नाते मुझे इस पृथ्वी पर कौन पूजा के योग्य नहीं है। अर्थात् सब पदार्थ जड़ या चेतन गुरु रूप होने के कारण पूज्यनीय हैं।

अखण्डमण्डलाकारं व्याप्तं येन चराचरम
तत पदं दर्शित येन तस्मै श्री गुरवे नमः

शब्दार्थ

अखण्ड	— समस्त	दर्शितम्	— दिखाया है
मण्डलाकार	— चक्राकार जगत	येन	— जिस गुरुदेव ने
व्याप्तं	— व्याप्त है	तस्मै	— उसी
चरा	— चल (movable)	श्री गुरुदेव	— कल्याणकारी गुरुदेव को
अचर	— अचल (immovable)	नमः	— नमस्कार हो।
तत्	— उसी का		
पदं	— स्वरूप		

भावार्थ

समस्त चराचर जगत जिस शिव से व्याप्त है उसी का स्वरूप जिस गुरुदेव नें दिखाया है उसी गुरु को मैं प्रणाम करता हूं।

अज्ञान तिमिरान्धस्य ज्ञानाञ्जन शिलाकया
चक्षुरुन्मीलितं येन तस्मै श्री गुरवे नमः

शब्दार्थ

अज्ञान	— अज्ञान रूपी	चक्षु	— आंखें
तिमिर	— अन्धकार	उन्मीलितं	— खोली
अन्धस्य	— अन्धे बने हुए	येन	— जिसने
ज्ञान	— ज्ञान रूप	तस्मै	— उन्हीं

अञ्जन	— काजल	श्री गुरुवे	— कल्याणकारी गुरु देव को
शिलाकया	— सलाई से	नमः	— मेरा सादर नमन हो

भावार्थ

अज्ञान रूपी अन्धकार से अन्धे बने हुए शिष्यों की आंखों को जिस गुरुदेव ने ज्ञान रूपी काजल की सिलाई से खोल दी अर्थात् ज्ञान का उपदेश करके आत्मज्ञान सिखलाया उन्हीं कल्यानकारी गुरुदेव को मेरा सादर नमन हो।

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णु गुरुः साक्षात् महेश्वरः
गुरुरेव जगत्सर्वं तस्मै श्री गुरवे नमः

शब्दार्थ

गुरु	— गुरु (ही)	महेश्वर	— महेश्वर है[3]
ब्रह्मा	— ब्रह्म है[1]	गुरु	— गुरु ही
गुरु	— गुरु ही	जगत सर्वं	— सारा जगत
विष्णु	— विष्णु है[2]	तस्मै	— ऐसे
गुरु	— गुरु ही	श्री गुरु वे	— कल्याणकारी गुरु को
साक्षात्	— प्रत्यक्ष	नमः	— मेरा नमस्कार हो

भावार्थ

गुरु ही ब्रह्मा है गुरु ही विष्णु है गुरु ही प्रत्यक्ष महेश्वर है गुरु ही समस्त जगत रूप भी है ऐसे श्री गुरुदेव को मेरा नमन हो।

---

1) ब्रह्मा...इच्छा...प्रमाता (The knower, Subject)
2) विष्ण...ज्ञान...प्रमेय (Object of knowledge)
3) महेश्वर...रुद्र...क्रिया...प्रमाण (means of knowledge)

नमामि सद्गुरुं शान्तं प्रत्यक्षं शिवरूपिणम्
शिरसा योग पीठस्थं धर्मकामार्थं सिद्धये ।

शब्दार्थ

नमामि	-- नमन करता हूं	पीठस्थम्	— पीठ पर ठहरे हुए
सदगुरुम	— सदगुरु को (Spiritual master)	धर्म	— धर्म
शान्तम्	— शान्त	कामार्थं	— काम, अर्थ और मोक्ष
प्रत्यक्षम्	— प्रत्यक्ष	सिद्धये	— सिद्धि के लिए
शिरसा	— सिर झुकाकर		
योग	— योग की		

भावार्थ

धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष (चार पुरुषार्थों का क्रम) की सिद्धि[1] के लिए मैं शान्त, प्रत्यक्ष शिवरूप योग की पीठ पर[2] ठहरे हुए सदगुरु को सिर झुकाकर प्रणाम करता हूं ।

---

1) कार्य रूप में परणित करना (in effectuation)
2) पूर्ण सिद्ध Perfect Being

ध्यान मूलं गुरोर्मूर्ति पूजामूल गुरोः पदम्
मन्त्र मूलं गुर्रोवाक्यं मोक्षमूलं गुरो कृपा ।

शब्दार्थ

ध्यान	— उत्तम ध्यान	पदम्	-- वाक्य (वाणी)
मूलं	— मूल	मन्त्र मूलं	— मन्त्र हैं
गुरुः मूर्ति	— साकार स्वरूप का	गुरोर वाक्यम्	-- गुरु देव के वाक्य

पूजा	— ज्ञान क्रिया रूपी चरणों का विमर्श	मोक्ष	— मोक्ष (जन्म मरण से छुटकारा)
मूलं	— वास्तविक पूजा है	मूलं	— मूल
गुरोः	— श्री गुरुदेव की	गुरु कृपा	— श्री गुरुदेव की दया दृष्टि

भावार्थ

गुरुदेव का साकार स्वरूप ध्यान का मूल है, गुरुदेव के चरणों की पूजा मूल पूजा है। गुरु का वाक्य ही मन्त्र है और गुरु की कृपा ही मोक्ष (Liberation) का मूल है।

चैतन्यं शाश्वत शान्तं व्योमातीत निरञ्जनम्
बिन्दुनाद कलातीतं तस्मै श्री गुरुवे नमः

शब्दार्थ

चैतन्यं	— चितिरूप वाला	बिन्दुनाद	— बिन्दुनाद
शाश्वत	— दृढ़	कलातीतं	— कला के उपर
शान्तं	— शान्त	तस्मै	— ऐसे
व्योमातीत	— आकाश से परे	श्री गुरुवे	— श्री गुरुदेव को
निरञ्जनम्	— मलरहित	नमः	— प्रणाम करता हूं

भावार्थ

ऐसे गुरुदेव को नमस्कार करता हूं जो चितिरूप वाला (omni-present Reality), दृढ़, शान्त, आकाश से अतीत (The infinite) मल रहित बिन्दुनाद[1] कलाओं[2] से उपर है।

---

1) बिन्दु—Point representing Shiva's undivided manifestation of universe or Mataphysical point or light (शिव) नाद—Metaphysical sound or creative sound (शक्ति)
2) कलातीत—beyond limited agency.

अखण्डानन्द सिन्धुस्ते शिष्य सन्ताप हारिणे
सद्चिद् आनन्द रूपाय शिवाय गुरुवे नमः

शब्दार्थ

अखण्ड	— समस्त	हारिणे	— हरणे वाला है
आनन्द	— आनन्द के	सच्चित आनन्द	— सत और चित् रूप परम आनन्द
सिन्धुस्ते	— समुद्र को प्रदान करने वाला	रूपाय	— रूप
शिष्य	— शिष्यों के	शिवाय	— ऐसे शिव रूप
सन्ताप	— सन्ताप को	गुरुवे नमः	—गुरु को मेरा नमन हो

भावार्थ

ऐसे शिवरूप तथा आनन्द रूप गुरु महाराज को मेरा नमन हो जो पूर्ण आनन्द के समुद्र को प्रदान करने वाला है तथा शिष्यों के सन्ताप को हरने वाला है।

सच्चित् आनन्द—Supreme Bliss

श्री शम्भुनाथ भास्करचरणनिपात प्रभापगत संकोचम्
अभिनवगुप्त हृदम्बुजमेतद्विचन्वत महेश पूजन हेतोः

शब्दार्थ

श्री शम्भुनाथ	— शम्भुनाथ या सिद्धनाथ
भास्कर	— रूपी सूर्य के
चरणनिपात	— चरणों में शरण आने से
प्रभापगत	— प्रताप (दीप्ति) से छोड़ दिया है

संकोचम्	— संकोच को
अभिनवगुप्त	— अभिनवगुप्त के
हृदम्बुजम्	— हृदय कमल
एतत् विचिन्वत्	— विचार करले
महेश पूजन हेतोः	— महेश्वर के पूजा के लिए

भावार्थ

श्री शम्भुनाथ रूपी सूर्य की शरण में आने से तथा उसी दीप्ति के प्रभाव से जिसने संकोच छोड़ दिया है अर्थात् प्रफुल्लित हुआ है ऐसे अभिनवगुप्त का हृदय कमल (यह शास्त्र)[1] महेश्वर की पूजा के लिए विचार करें (समावेश में लावें)

---

1) यह श्लोक आचार्य अभिनगुप्त कृत श्री तन्त्रालोक (शैवशास्त्र) का है ।

2) श्री शम्भुनाथ अथवा सिद्धनाथ (10th Century middle) अभिनगुप्त के विद्या गुरु रहे हैं ।

श्री सिद्धनाथ करुणाकर शम्भुनाथ

श्री शम्भुनाथ करुणाकर सिद्धनाथ

History of Kashmir Shaivism
by Dr. B. N. Pandit P. 61)

अभिनवरूपा शक्तिस्तदगुप्तो यो महेश्वरो देवः
तदुभययामलस्थमभिनव गुप्तं शिवं वन्दे

शब्दार्थ

अभिनव रूपा	— अभिनव रूपी
शक्ति	— शक्ति
तत् उभय	— ऐसे दोनों
यामल	— जोडा(महेश्वर+अभिनव गुप्त रूपी शक्ति

तद्‌गुप्तो	— ऐसी गुप्त शक्ति	स्थम्	— स्थित
यो महेश्वरो	— जिसका महेश्वर ही	अभिनवगुप्त शिवम् वन्दे	—अभिनगुप्त रूपी शिव की वन्दना करता हूं ।
देवः	— देव है		

भावार्थ

अभिनव रूपी शक्ति वह गुप्त शक्ति है जिस का महेश्वर ही देव है। उन दोनों (महेश्वर+अभिनवगुप्त रूपी शक्ति) स्थित अभिनगुप्त रूपी शिव की मैं वन्दना करता हूं।

तत्पादपद्‌मयुगल स्मृति भास्कर मयूख वृन्दैः
विकसितकरणौघं लब्ध क्षेम क्षेमंराज वन्दे ।

शब्दार्थ

तत्	— वह (उन)	भास्कर मयूख	— सूर्य की किरणें
पाद	— चरण	वृन्दै	— समूह द्वारा
पद्‌म	— कमल	विकसितकरणौघं	— पूर्ण विकसित होने से
युगल	— जोड़ी	लब्ध	— जिसने पाया है
स्मृति	— याद करने से (चिन्तन)	क्षेमम्	— शाश्वत आनन्द
		क्षेमराज वन्दे	— क्षेमराज को नमन हो

भावार्थ

उनके (श्री अभिनवगुप्त) के पाद कमल के जोड़े को याद करने से (चिन्तन करने से) जिसने सूर्य किरणों जैसे समूह द्वारा पूर्ण विकास होने रूपी शाश्वत आनन्द पाया है ऐसे श्री क्षेमराज को हमारा नमन हो।

य। सर्वात्माखिल जन विभुर्देवदेवो महेशः
स्वातन्त्र्यस्थो ध्रुव पद गतो निश्चलात्मा वरेण्यः
विश्वोतीर्णो भवभयहरः स्वेच्छया विश्वपूर्ण-
स्तं श्री रामं त्रिभुवन गुरुं स्वात्मरूपं नमामि

शब्दार्थ

यः	— जो	निश्चलात्मा	— निश्चय स्वभाव
सर्वात्म	— जडचेतन को सत्ता देने वाला	वरेण्यः	— उत्तम
		विश्वोत्तीर्ण	— जगत से परे
अखिल	— सभी	भवभय	— जन्म मरण का भय
जन	— जीवों		
विभुर	— व्यापक	हरः	— दूर करने वाला
देव देवो	— देवों के देवता	स्वच्छया	— अपनी इच्छा (क्रीड़न शील)
महेश	— महेश्वर		
स्वातन्त्र्य	— स्वतन्त्र	विश्व	— जगत
स्थो	— स्थित	पूर्णा	— मय
ध्रुव	— अविनाशी	तंश्रीरामं	— ऐसे श्री राम
पद	— पद पर	त्रिभुवन	— तीनों लोकों का
गतो	— ठहरा हुआ	गुरु	— गुरुदेव
		स्वातम रूपम्	— मेरा अपना रूप
		नमामि	— मैं प्रणाम करता हूँ

भावार्थ

मैं तीन लोकों के गुरुदेव जो मेरा अपना स्वरूप है, जो सब जड़ चेतन को सत्ता देने वाला अपनी इच्छा से क्रीडनशील, सभी जीवों में व्याप्त, देवों के भी देव, महेश्वर, स्वतन्त्र पद परस्थित, अविनाशी अटल तथा उत्तम है, विश्वमय होकर भी जगत से परे है और भक्तों का भवभय

हरने वाला है। ऐसे श्री गुरुदेव श्री राम जी को मैं शीश नमन करता हूं।

शैवामनाय प्रवचन रति शंकरो योहि देवः
पीयूषांशु इव मुख रुचा हलादयन शिष्यसंघान
दीप्ता भास्वान इव हृदयपंकेरुहोद् बोध हेतुः
तं श्री विद्याधर गुरु वर स्वात्मरामं नमामि।

शब्दार्थ

शैव	— शैव सिद्धान्त	दीप्त्या	— दीप्तिमान
आमनाय	— नाम वाला (शास्त्र)	भास्वान	— सूर्य जैसा
प्रवचन	— व्याख्यान	हृदय	— हृदय रूपी
रति	— लगे हुए	पंकेरुह	— कमल
शंकरो	— शंकर	उद्बोध	— प्रफुल्लित
योहि	— जो है	हेतुः	— कारण
देव	— देवता	तं श्री	— उस श्रेष्ट
पीयूषांशु	— अमृत बरसाने वाला (शीतल) चन्द्रमा	विद्याधर	— विद्याधर नामी
		गुरुवर	— गुरुवर
इव	— जैसा	स्वात्मरामं	— अपने ही आनन्द में लगे को
मुखरुचा	— विकसित मुख वाला		
अहलादयन	— अहलाद देने वाला	नमामि	— मैं नमन करता हूं
शिष्य संघान	— शिष्य मण्डली		

भावार्थ

शिव ही परम देव है ऐसे शैव शास्त्र (सिद्धान्त) के व्याख्यान में लगे हुए अपनी शिष्य मण्डली को समझाने हेतु जिसका मुख अमृत बरसाने वाला (शीतल) चन्द्रमा की तरह अहलाद देने वाला तथा सूर्य

° यह श्लोक इस स्तवन में बाद में जोड़ दिया गया है।

की तरह दीप्तिमान हृदय कमल को प्रफुल्लित करने वाला है ऐसे श्री विद्याधर गुरु श्रेष्ट को जो आत्म आनन्द में लगे हुए ही हैं को मैं सादर नमन करता हूं ।

नीरेन्द्र मोह तिमिरस्य विनाश दक्षं
यस्येन्दु मण्डलं इव वदनं चकास्ति
तृष्णाहरः सुकृत भाग्यवतां जनानाम्
तं श्री महादेव गुरुं नमामि ।

शब्दार्थ

नीरेन्द्र	— घने	वदनं	— मुख
मोह	— मोह के	चकास्ति	— चमकता है
तिमिरस्य	— अन्धकार को	तृष्णा हरः	— तृष्णा का नाश करने वाला
विनाश	— नाश करने में	सुकृत	— अच्छे कर्मों के
दक्षं	— सामर्थ्यवान्	भाग्यवतां	— भाग्य से भरे
यस्य	— जिसका	जनानां	— भक्तों को
इन्दु	— चन्द्र	तं श्री	— उस मोक्षलक्ष्मी वाला
मण्डल	— मण्डल के	महादेव	— महादेव नामी गुरु को
इव	— समान		
		नमामि	— मैं प्रणाम करता हूं

भावार्थ

घने मोह के अन्धकार को नाश करने के लिए सामर्थ्यवान जिसका मुख चन्द्रमण्डल के समान चमकता है । अच्छे कर्मों के भाग्यों से भरे हुए भक्त जनों[1] को तृष्णा[2] का नाश करने वाला है उस मोक्ष लक्ष्मी युक्त[3] श्री महादेव गुरु को में प्रणाम करता हूं ।

1) Devoted people
2) Spiritually undeveloped.
3) Liberated. It is said :-

पीनां च दुर्बलां शक्ति ध्यात्वा द्वादशगोचरे
प्रविश्य हृदये ध्यायन मुक्तः स्वातन्त्र्यमाप्नुयात्

(V. B. 55)

If a Yogi meditates on Prana Shakti (when) made delicate & subtle) either in dvadashanta or in the heart by entering mentally into it, he is liberated and he gains divine power.

पुरा पुरारे पदधूलि धूसरः
अनन्त सिद्धान्त पथान्त गामिनः
समस्त शास्त्रार्णव पार दृश्वनः
विद्याधरस्य प्रिय सूर्यकण्ठ नमामि ।

पूर्व काल में भगवान शिव के (परम भक्त) चरण कमल की धूलि से धूसरित (स्वच्छ) अनन्त सिद्धान्तों का यथार्थ रहस्य जानने वाले सारे शास्त्रों के पारङ्गत, स्वामी विद्याधर के परम प्रिय शिष्य महात्मा डॉ॰ सूर्यकण्ठ को मैं प्रणाम करता हूं ।

निःसामान्य मान्याय
न्याय मार्गोपदेशिने
दुर्वार भवरुग्भङ्ग भिषजे
विद्याधरस्य प्रियं सूर्यकंण्ठ नमामि ।

सामान्य से उपर (Being Extra-ordinary) परम पूज्य, सत्य मार्ग का उपदेशी दुर्निवार्य संसार रूपी व्याधि का चिकित्सक, ऐसे श्री स्वामी विद्याधर के प्रिय (परम शिष्य) महात्मा डॉ॰ सूर्यकण्ठ को मेरा नमन हो ।

यह श्लोक भी बाद में जोड़ दिए गए हैं ।

यस्योन्मेष निमेषाभ्यां जगतः प्रलयोदयौ
तं शक्तिचक्र विभव प्रभवं शङ्करं स्तुमः

शब्दार्थ

यस्य	— जिस परम शिव के	विभव	— वैभव तथा
उन्मेष	— उन्मुखता (unfoldment)	प्रभवं	— प्रभाव जिसका
निमेषाभ्यां	— विश्राम से (Involution)	शंकरम्	— ऐसे शिव की
जगत	— समस्त जगत का	स्तुमः	— मैं स्तुति करता हूं
प्रलय	— प्रलय		
उदय	— उदय होता है		
तं शक्ति	— उस शक्ति		

भावार्थ

जिस परम शिव के उन्मेष तथा निमेष से इस समस्त संसार का प्रलय तथा उदय हुआ करता है। ऐसे शक्तिशाली तथा शक्ति वैभव युक्त तथा प्रभाव सम्पन्न शंकर की मैं स्तुति करता हूं।

(उन्मेष में ज्ञान क्रिया आदि से इच्छा शक्ति का निवास है और वह फैलती है इसका विराम ही प्रलय है)

न ध्यायतो न जपतः स्यात् यस्याविधि पूर्वकम्
एवमेव शिवाभासस्तं नमो भक्ति शालिनम्

शब्दार्थ

न	— बिना	एवम् एव	— ऐसे ही
ध्यायतः	— ध्यान के	शिव	— परमशिव का

न	— बिना	आभास:	— भास (प्रकाश) हो
जपत	— जपके	तं	— उस
स्यात	— प्राप्त हो	नमो	— वन्दना करते हैं
यस्य	— जिसको	भक्ति	— भक्त
अविधि	— बिना विधि	शालिनम्	— शोभायमान
पूर्वकम्	— रूप से		

भावार्थ

जिसको विना ध्यान के, विना जप के, विना विधि के प्रकाशात्मक शिव का भास है (ऐसे) चिदानन्द घन शिवात्मस्वरूप भक्ति से सुशोभित व्यक्ति की हम वन्दना करते हैं ।

उद्धरत्यन्धतमसात् विश्वमानन्द वर्षिणी
परिपूर्ण जयत्येका देवी चिच्चन्द्र चन्द्रिका

शब्दार्थ

ऊद्धरति	— उधार करती है	परिपूर्ण	— परिपूर्ण है
अन्धतमसात्	— अज्ञानरूपी अन्धकार से	जयति	— जय जयकार हो
विश्वम् आनन्द	-- जगत को आनन्द की	ऐकादेवी	— ऐसी (संवित देवी को)
वर्षिणी	— बर्षा करती है (बरसाती है)	चित्	— जो चित्त रूप
		चन्द्र चन्द्रिका	-चन्द्रमा की चान्दनी (प्रकाश)

भावार्थ

संवित् देवी[1] की जय जयकार हो जो जगत को अज्ञान रूपी अन्धकार से निकालती है तथा उद्धार करती है । जो आनन्द की बर्षा करती है जो परिपूर्ण है तथा जो शिवरूप (चित्रूप)[2] चन्द्रमा की चान्दनी (प्रकाश) रूप है ।

---

1) Supreme Consciousness
2) The Absolute

नौमि चित्प्रतिभां देवीं परां भैरवयोगिनीम्
मातृमान प्रमेयांश शुलाम्बुजकृतास्पदाम्

शब्दार्थ

नौमि	— नमस्कार करता हूं	योगिनीम्	— साथी
चित्	— चैतन्यरूप	मातृमान	— माता के रूप में
प्रतिभाम्	— शोभायमान	प्रमेयांश	— प्रमाता, प्रमाण, प्रमेय
देवीं	— संवित् भगवती	शूलाम्	— त्रिशूल
परां	— परा रूप	अम्बुज	— कमल पर
भैरव	— भैरव रूप शिव	कृतास्पदम्	— स्थित है

भावार्थ

मैं उस संवित् भगवती[1] को नमस्कार करता हूं जो परा रूप[2] है। चित् भैरव[3] रूप शिव की साथी है। जो प्रमाता प्रमाण, प्रमेय रूप[4] त्रिशूल के साथ माता के रूप में कमल पर विराजमान है।

---

1) Supreme Consciousness
2) The basic source of utterances.
3) bha=Sustenance ra=dissolution Va=creation therefore Shakti of Bairava.
4) a) the subject. b) means of Knowledge c) the object.

नौमि देवी शरीरस्थां नृत्यतो भैरवाकृते
प्रावण्मेघ घन व्योम विद्युल्लेखा विलासिनीम्

शब्दार्थ

नौमि	— नमस्कार करता हूं	भैरव	— भैरव (शिव)
देवी	— चित्त शक्ति	आकृते	— रूप
शरीरस्थां	— स्वरूप में स्थित	प्रावृण् मेघ घन	— वर्षा ऋतु के घने बादल
नृत्यतो	— नाचती हुई	व्योम विद्युत	—ढके हुए आकाश में बिजली की चमक
		लेखा विलासिनीम्	—रेखा की तरह चमकती है

भावार्थ

मैं उस चित् शक्ति देवी[1] को नमस्कार करता हूं जो भैरव (शिव)[2] के अभिन्न स्वरूप में स्थित है जो वर्षा ऋतु के घने बादलों से ढके हुए आकाश में बिजलो रेखा जैसी चमकती है ।

---

1) Foundational consciousness
2) Supreme Reality

प्रसरच्छवित कल्लोल जगत्लहरिकेलये
सर्वसम्पन्निधामाय भैरवाम्बोधये नम:

शब्दार्थ

प्रसर	— फैली हुई	सर्व सम्पन्न	— सब सम्पदाएँ
शक्ति	— शक्तियों की	निधानाय	— खज़ाना
कल्लोल	— क्रीड़ारूप	भैरव	— भैरवरूप
जगत	— जगत	अम्भोधये	— सागर को
लहरि	— लहरें	नम:	— नमस्कार हो ।
केलये	— निकलती हैं		

भावार्थ

क्रीड़ारूप समस्त जगत, जिस भैरव रूप सागर से निकलती हुई लहरें हैं तथा जिससे सब सम्पदाओं की कोश रूप शक्तियां[1] फैली हुई हैं ऐसे भैरव रूप सागर को मेरा नमस्कार हो ।

---

1) Power of capacity to effect something.

प्रसरद्बिन्दु नादाय शुद्धामृतमयात्मने
नमोऽनन्त प्रकाशाय शंकरक्षीर सिन्धवे ।

शब्दार्थ

प्रसरद्	— भरी हुई है	आत्मने	-- शक्तियां
बिन्दु	— बिन्द	नमो	— नमस्कार हो
नादाय	— नाद रूप	अनन्त	— असीम
शुद्ध	-- शुद्ध	प्रकाशाय	— प्रकाशरूप
अमृतमय	— परमानन्द	शंकर	— शिव
		क्षीर सिन्धवे	— क्षीर सागर

भावार्थ

शिवरूप क्षीर सागर को, जिस में नाद[1] और बिन्द रूप[2] (ज्ञान और क्रिया) शक्तियां भरी हैं जो परमानन्द[3] पूर्ण हैं और सारे जगत का प्रकाश रूप है, मेरा नमस्कार हो ।

---

1) Unstruck Sound experienced in meditation.

2) A metaphysical point

3) Divine Bliss.

सर्वसंविन्नदीभेदऽभिन्नविश्राम भूमये
नमः प्रमातृवपुषे शिव चैतन्य सिन्धवे

शब्दार्थ

सर्व	— सभी	प्रमातृवपुषे	— प्रमातृरूप
संवित् नदी	— संवित् रूपी नदियों का	शिवचैतन्य	— शिव चैतन्यरूप
भेद	— भेद	सिन्धवे	— सागर में
अभिन्न	— अभिन्न		
विश्रामभूमि	— लय का स्थान		
नमः	— नमस्कार है		

भावार्थ

जैसे सभी नदियों का विलय स्थान एक ही सागर है उसी प्रकार सभी संवित् रूप भेदाऽभिन्न प्रमाताओं का विश्रान्ति स्थान शिव चैतन्य रूप है उसी की शरण लेते हैं। उसी को हमारा नमन हो।

Note : संवित् शिव ही है और शिव ही संवित् है।

विश्वैकरूपविश्वात्म विश्वसर्गादिकारणम्
पर प्रकाशवपुषं स्तुमः स्वच्छन्द भैरवम्

शब्दार्थ

विश्वैक रूप	— विश्व के साथ एक रूप	प्रकाश	— चित्प्रकाश
विश्वात्म	— विश्व ही स्वरूप है	वपुषम्	— स्वरूप है
विश्व	— विश्व की	स्तुमः	— स्तुति करते हैं
सर्गादि	— सृष्टि, स्थिति, संहार,	स्वच्छन्द	— स्वतन्त्र

	विलय, अनुग्रह	भैरवम्	— भैरव (शिव की)
कारणम्	— कारण है		
पर	— (जो) उत्तम		

भावार्थ

जो जगतरूप हैं। विश्व ही जिसका स्वरूप है। जो विश्व की सृष्टि, स्थिति, संहार, विलय और अनुग्रह करता है। जो उत्तम चित्प्रकाश है ऐसे स्वच्छन्द[1] भैरव (शिव) को हम स्तुति करते हैं।

---

1) Guided by its own Principles. Independent.

जयन्ति जगदानन्द विपक्ष क्षपण क्षमाः
परमेश मुखोद् भूत ज्ञान चन्द्र मरीचयः

शब्दार्थ

जयन्ति	— जय हो	क्षमा	— समर्थ
जगत	— जगत के	परमेश	— परमेश्वर
आनन्द	— आनन्द रूप	मुख	— मुख से
विपक्ष	— उल्टा पक्ष	उदभूत	— उत्पन्न हुई
क्षपण	— नाश करने में	ज्ञान	— ज्ञानरूप
		चन्द्र मरीचयः	— चन्द्रमा की किरणें

भावार्थ

परम शिव से उत्पन्न हुई ज्ञानरूपी चन्द्रमा की किरणों की जय हो जो जगत के आनन्द रूप में उल्टे पक्ष[1] को नाश करने में सामर्थ्यवान है।

---

1) Negative aspect.

विश्वात्मिक तदुत्तीर्णा हृदयं परमेशितुः।
पराद्दि शक्तिरूपेण स्फरन्ती संविदं नुमः

शब्दार्थ

विश्वात्मिकां	— विश्वरूप होने पर भी
तद् उत्तीर्णा	— उस के उपर
हृदयं परमेशितु	— परम शिव का सार है
परा आदि	— परा पश्यन्ती, मध्यमा, वैखरी
(अथवा)	— परा, परापरा, अपरा
शक्तिरूपेण	— शक्ति रूप के द्वारा
स्फरन्ती	— विकसित होकर प्रकट होती है
संविद्	— संवित भगवती
नुमः	— नमस्कार करते हैं

भावार्थ

विश्वरूप होने पर भी इस (जगत) से भिन्न (परे) है। परम शिव का सार है जो परा (आदिस्वर), पश्यन्ती (अव्यक्त), मध्यमा (व्यक्तावक्त), वैखरी (व्यक्त) होकर प्रकट होती है उस संवित् देवी जो सब पदार्थों में एक समान अथवा परा शक्ति (अभेद शक्ति) परापरा शक्ति (भेदाभेद शक्ति) और अपरा शक्ति (भेद शक्ति) के द्वारा संकोच ग्रहण करके जगत रूप में स्फार होकर प्रकट होती है उस संवित् देवी (जो सब पदार्थों में एक समान विकसित है) को हम प्रणाम करते हैं।

नमः शिवाय सततं पञ्चकृत्य विधायने
चिदानन्दघन स्वात्म परमार्थाव भासिने।

शब्दार्थ

नमः	— प्रणाम करता हूं	चिद्	— चित्
शिवाय	— शिव को	आनन्दगण	— आनन्द पूर्ण
सततं	— नित्य	स्वात्म	— अपने स्वरूप की
पञ्चकृत्य	— पांच कार्य	परमार्थाव	— वास्तविकता को
विधायिने	— करने वाला	भासिने	— प्रकट करने वाले

भावार्थ

उस भगवान् शिव[1] को प्रणाम करता हूं जो नित्य पंचकृत्य[2] करने वाले चित्-आनन्द पूर्ण[3] अपने स्वरूप की वास्तविकता[4] को प्रकट करते हैं।

---

1) All pervasive Supreme Reality.

2) सृष्टि=to project स्थिति=maintenance संहार=Re-absorption पिधान=concealment, अनुग्रह=grace bringing liberation.

3) Full of spiritual bliss.

4) Highest Value of Real Self of an individual.

नमः शिवाय निःशेषक्लेशप्रशमशालिने
त्रिगुणग्रन्थिदुर्भेद भव बन्ध विभेदिने ॥

शब्दार्थ

नमः	— प्रणाम हो	शालिने	— समर्थ है
शिवाय	— भगवान् शिव को जो	त्रिगुणग्रन्थि	— त्रिगुणात्मा गांठ को
निःशेष	— समस्त		

क्लेश	— दुःख	दुर्भेद }	— जिसको खोलना कठिन है
प्रशम	— शांत करने में	भवबन्ध	— संसारिक वन्धन
		विभेदिने	— नष्ट करने में

भावार्थ

भगवान शिव को हमारा प्रणाम हो जो समस्त दुखों को शांत करने में, कठिन त्रिगुणात्मक[1] गाठों को खोलने के तथा संसारिक बन्धनों[2] को नष्ट करने में समर्थ है।

---

1) Constituents of Prakrati.
   सतोगुण=Harmony
   रजोगुण=Disharmony
   तमोगुण=Delusion (inertia)
2) Materialistic/Wordly bondage.

अकुलस्यास्य देवस्य कुल प्रथन शालिनी
कौलिकी सा परा शक्तिरवियक्तो यया प्रभुः

शब्दार्थ

अकुलस्यास्य	— ३६ तत्त्व रूप कुल से परे (शिव से पृथ्वी तक)
देवस्य कुलप्रथन	— शिव के कुल को प्रकट करने के
शालिनी	— शोभायमान
कौलिकी	— कौलिकी नाम वाली परा शक्ति
सा	— वह (परा शक्ति)
अवियुक्तो	— अभिन्न
यया	— जो
प्रभु	— भगवान शिव

भावार्थ

कौलिकी नाम की परा शक्ति जो ३६ तत्त्व¹ रूपी कुल से परे शिव के कुल को प्रकट करने से शोभायमान है, हर समय उस शिव प्रभु से अभिन्न रहती है ।

1) 36 categories of Reality from Shiv to Earth, explained in Pra Praveshika.

चतुर्दशं युतं भद्रे तिथिशान्तसमन्वितम्
तृतीयं ब्रह्म सुश्रोणि हृदयं भैरवात्मनः

शब्दार्थ

चतुर्दश	— चौदहवें स्वर	तृतीयं	— तीसरा
युतं	— युक्त अर्थात् और	ब्रह्म	— ब्रह्म (सत् का स
भद्रे	— हे देवी	सुश्रोणि	— हे सुन्दर श्रोणि-वाली
तिथीश	— अ के अन्तिम अर्थात् अः		
		हृदय	— हृदय
अन्तः	— पीछे	भैरव	— भैरवीय
समन्वितम्	— मिलाकर	आत्मनः	— शक्तिभाव की आत्मा वाले

भावार्थ

हे देवी ! चौदहवें स्वर अर्थात् औ को अपने साथ मिलाकर अ के अन्तिम अः को उसके पीछे लगाकर तीसरा ब्रह्म (स) मिलाकर स+औ+ः=सौः शक्ति भाव की आत्मा वाले वही नर भाव का भैरवी हृदय है ।

(इस श्लोक का तात्त्विक अर्थ गुरु कृपा से ही सम्भव है)
Briefly also explained in Acharya Khem Raj's Para-Praveshika

आद्यान्तरहितं बीजं विकसत्तिथि मध्यगम्
हृत्पद्मान्तर्गतम् ध्यायेत सोमांशं नित्यमभ्यस्येत

शब्दार्थ

आदि अन्त रहित	— आदि और अन्त के विना
बीजं	— शक्ति
विकसति	— विकसित होती है
तिथि मध्यगम	— मध्य में स्थित
हृत्पद्मान्तर्गतम्	— हृदय कमल में
ध्यायेत नित्यम	— नित्य ध्यान करना चाहिए
सोमांशं	— चन्द्रमा के अंश (अमृत रूप)
नित्यं अभ्यस्येत	— नित्य अभ्यास करना चाहिए

भावार्थ

आदि और अन्त रहित[1] बीज (शक्ति) जो मध्य नाडी (सुषुम्ना) में विकसित होती है उसी को हृदय कमल में ध्यान करके चन्द्रमा के अशं (अमृत रूप) का नित्य विमर्श करना चाहिए ।

---

1) Introversion of mind and senses. इस के लिए कहा गया है :-

इन्द्रियद्वारकं सर्वं सुखदुःखादिसङ्गमम् ।
इतीन्द्रियाणि संत्यज्य स्वस्थः स्वात्मनि वर्तते ।।

(V. B. 136)

(सब सुखों और दुखों का भास इन्द्रियों द्वारा समभ्व है अतः इन्द्रियों को निष्पक्ष करके अपने ही स्वरूप में दृढ़ता से पालन करना चाहिए)

रक्षणीयं वर्धनीयं बहुमान्यमिदं प्रभो ।
संसार दुर्गतिहरं भवद्भक्ति महाधनम् ।।

शब्दार्थ

रक्षणीयम्	— रक्षा करना	संसार	— संसार की
वर्धनीयं	— वृद्धि करने	दुगति	— दुर्गति
बहुमान्यम्	— बहुत मान के योग्य है	हरम्	— दूर करती है
इदम्	— यह	भव	— आप का
प्रभो	— हे प्रभु	भक्ति	--- भक्ति रूपी
		महाधनम्	— महाधन

भावार्थ

हे प्रभु ! आप का भक्ति रूपी महाधन रक्षा करने, वृद्धि करने और बहुत मान के योग्य है। यह संसार की दुर्गति (जन्म मरण का चक्कर) दूर करती है।

सर्वा शंकाशर्नि सर्वा लक्ष्मी कालानलं तथा
सर्वामंगल्य कल्पान्तं मार्ग माहेश्वरं नुमः ।।

शब्दार्थ

मर्वा	— सभी	तथा	— और
शंका	— शंकाओं को	सर्व	— सब
शनि	— शान्त करने में	अमंगल्य	— अमंगलों के लिए
सर्व	— सभी	कल्पान्तं	— कल्पान्त है
अलक्ष्मी	— दुर्भाग्यों के लिए	मार्ग	— ऐसे मार्ग को
कालानल	— कालाग्नि रुद्र	माहेश्वरं	— जो महेश्वर का है
		नुमः	— नमस्कार हो

भावार्थ

महेश्वर के इस मार्ग[1] को नमस्कार हो जो सब शंकाओं को शांत करता है। सभी दुर्भाग्यों के लिए कालाग्नि रुद्र है और सब अशुभों के लिए कल्पान्त अर्थात् प्रलय है।

महेश्वर का मार्ग=त्रिक्मार्ग=शिव, शक्ति, जींव

परा—Non-different from Shiva

परापरा—Intermediate state or Unity in Diversity.

अपरा – The state of difference

यस्मिन सर्वं यतः सर्वं यः सर्वं सर्वतश्चयः
यश्च सर्वमयो नित्यं तस्मै सर्वात्मने नमः

शब्दार्थ

यस्मिन	— जिसमें	यः	— जो
सर्वं	— सारा (विश्व) ठहरा है	यश्च	— जिससे
यतः	— जिससे	सर्वमयो	— सर्वमय है
सर्वं	— यह सारा (जगत) निकलता है	नित्यं	— (हम) नित्य
		तस्मै	— उस परम शिव को
यः	— जो	सर्वात्मने	— जो सर्वात्म रूप है
सर्वं	— इस सब जगत के रूप में है	नमः	— प्रणाम करते हैं।
सर्वतश्च	— सब तरफ से प्रकट है		

भावार्थ

जिस शिव में यह सारा विश्व ठहरा है। जिस में से यह सब

निकलता है। जो इस सब जगत के रूप में है, जो सब तरफ से प्रकट है और जो सर्वमय है। ऐसे सर्वात्म रूप[1] शिव को हम प्रणाम करते हैं।

---

1) सर्वज्ञः सर्वकर्त्ता च व्यापकः परमेश्वरः (V. B.—109)
The highest Lord is omniscient, omnipotent and omnipresent.

तद्देवता विभव भावि महामरीचि
चक्रेश्वरायत निजस्थितिरेक एव
देवी सुतो गणपतिः स्फुरदिन्दु कान्तिः
सम्यक्समुच्छलयतात् मम संविदब्धिम्

शब्दार्थ

तद्	— उन	गणपति	— गणेश
देवता	— देवताओं के (इन्द्रिय शक्ति रूप)	स्फरद्	— चमकता है
		इन्दु	— चन्द्रमा की
विभव	— शक्ति	कान्ति	— दीप्ति वाला
भावि	— बनाए हुए	सम्यक्	— प्रत्यक्ष रूप से
महा	— बड़े	समुच्छलयतात्	— विकसित करे
मरीचि	— किरण	मम्	— मेरे
चक्रेश्वरायत	— शक्ति चक्र का स्वामी	संविदब्धिम्	— संवित्सागर को
निजस्थितिर	— स्थिति वाला		
एक एव	— एक ही		
देवी सुतो	— देवी का पुत्र		

भावार्थ

गणपति परा शक्ति का पुत्र है, इन्द्रिय रूप शक्ति समूह (चक्र) का स्वामी है तथा ऐसे इन्द्रिय शक्ति रूप देवताओं के बनाए ऐश्वर्य चक्र

का स्वामी होते हुए भी अपने अहन्ता रूप पर स्थिति वाला है और चन्द्रमा की दीप्ति वाला भी है ऐसे गणपति मेरे संवित्सागर को विकसित[1] करे।

---

1) To unfold or spread out Supreme Consciousness

विश्वत्रभाव पटले प्रविजृम्भमाण
विच्छेद शून्य परमार्थ चमत्कृतिर्या
तां पूर्णवृत्यहमिति प्रथम स्वभावां
स्वात्मस्थितिं स्वरसतः प्रणामि देवीम्

शब्दार्थ

विश्वत्र	— सारे जगत में
भाव पटले	— पदार्थ समूह
प्रविजृम्भमाण	— विकसित है
विच्छेद	— छेद
शून्य	— रहित
परमार्थ	— परम अर्थ (essential-truth)
चमत्कृतिया	— चमत्कार रूप (चित्छक्ति)
तां	— उस देवी को जो
पूर्णवृत्यहमिति	- परा हंता रूप
प्रथन स्वाभावां	-प्रकट स्वभाव वाली
स्वात्मस्थितिं	—अपने चित्स्वरूप पर स्थित
स्वरसतः	— जगत की सृष्टि इत्यादि
प्रणमाभि देवीम्	-उस देवी को प्रणाम करता हूं

भावार्थ

मैं उस चित शक्ति देवी को प्रणाम करता हूं जो सारे विश्व के पदार्थ समूह में विकसित रहती है। छेद रहित परमार्थ की चमत्कार

रूप है जो पराहंता रूप से प्रकट स्वभाव वाली है। अपने चित्स्वरूप पर स्थित है और जगत की सृष्टि, स्थिति संहार इत्यादि करती है।

1) The Supreme state of absolute I (अनुत्तर)

चैतन्य पूरितमिद निखिलं हि विश्वम्
चित्तं चिदात्मनि यदास्तमुपैति शश्वत्
एवं चितेरपृथगेव स्वसंस्थितत्वात्
उक्तो निरस्त करण परम समाधिः।

शब्दार्थ

चैतन्य	— चैतन्यता से	शश्वत	— नित्य
पूरितम्	— भरा है (पूर्ण है)	एवं	— इस तरह
इदम्	— यह	चितेर	— चिति
निखिलं	— सारा	पृथक	— अभिन्न
हि	— निश्चय करके	एव	— ही
विश्वम्	— जगत	स्वसंस्थितत्वात्	- अहं स्वरूप पर स्थित
चितं	— चित्रूप	उक्तो	— कहते हैं
चिदात्मनि	— अहं भाव स्वरूप	निरस्त	— अस्त नहीं हुई
यदास्तम	— जब यह	करण	— इन्द्रियां
उपैति	— लय होकर	परम्	— उत्कष्ट
		समाधि	— समाधि

भावार्थ

निश्चय करके यह सारा जगत चैतन्यता से परिपूर्ण है। जब यह चित्स्वरूप में लय होकर नित्य अभिन्न रहे, चिति देवी के साथ

अभिन्न अहं स्वरूप पर स्थित रहे तथा इन्द्रियां अस्त नहीं हुई हैं। इसी अवस्था को परम समाधि[1] कहते हैं।

---

1) Mental absorption. चित=Absolute चिति=Power of Absolute चित्त:=Individual mind.

स्वातंन्त्र्य शक्ति क्रमसंसिसृक्षा
क्रमात्मता चेति विभोर्विभूति:
तदेव देवी त्रयमन्तरास्ता-
मनुत्तरं मे प्रथयृत्स्वरूपम्

शब्दार्थ

स्वातन्त्र्य	— स्वातन्त्र्य
शक्ति	— शक्ति आदि
क्रम	— क्रम को
संसिसृक्षा	— उत्पन्न करने की (इच्छा)
क्रमात्मा	— क्रम रूपता
चेति	— यही परमेश्वर (शिव)
विभोर	— व्यापक
विभूति	— विभूति है (नर शक्ति)
तदेव	— उसी से
देवी	— शक्ति
त्रयम्	— तीन
अन्तरास्तां	— अनन्त आभासों से
अनुत्तंर	— सर्वज्ञता भाव से
मे	— मुझ में
प्रथयत्	— प्रकट करे
स्वरूपम्	— अपने स्वरूप को

भावार्थ

स्वातन्त्र्य शक्ति के क्रम को उत्पन्न करने की इच्छा शक्ति तथा भेद क्रमरूपता अनन्त आभासों से मिला हुआ 'नर' व्यापक परमेश्वर को विभूति है। इस तरह तीन स्वरूप वाला शिव (नर, शक्ति, शिव) अपने सर्वज्ञता शक्तियों के स्वरूप को मुझ में प्रकट करें।

परं परस्थं गहनादनादि-
मेकं निविष्टं बहुधा गुहासु
सर्वालयं सर्वं चराचरस्थं
त्वामेव शंभुं शरणं प्रपद्ये ।

शब्दार्थ

परं	— परिपूर्ण	सर्वालयं	— सब का स्थान
परस्थं	— दूर ठहरे हुए (उत्तीर्ण)	सर्वं	— सभी
गहनाद्	— माया से	चराचरस्थं	— चल तथा अचल
अनादिम्	— आदि रहित	त्वामेव	— आप अनुत्तर को
एकं	— एक ही	शम्भुं	— कल्यान की भूमि (शिव)
निविष्टं	— ठहरे हुए		
बहुधा	— बहुत प्रकार	शरणम्	--- शरण में
गुहासु	— गुफाओं में	प्रपद्ये	— आता हूं ।

भावार्थ

आप अनुत्तर कल्याणकारी शिव की शरण आता हूं (प्रणाम करता हूं) जो परिपूर्ण माया[1] से अलग दूर ठहरे हैं । अनादि हैं । एक ही होते हुए भी बहुत प्रकारों से हृदय[2] रूपी गुफाओं तथा सभी स्थावर और जङ्गम रूपी पदार्थों में ठहरे हैं ।

1) Veiling the infinite.
2) Central Consciousness

क्लेशान्विनाशय विकासय हृत्सरोज-
मोजो विजृंभय निजं नरिनर्तयाङ्गम्

चेतश्चकोर चिति चन्द्रमरीचि चक्र-
माचम्य सम्यगमृती कुरू विश्वमेतत्

शब्दार्थ

क्लेशान	— दुखों को	चेतश्चकोर	— बुद्धि रूपी चकोर
विनाशये	— नाशकर	चिति	— चितिरूपी
विकासय	— विकसित करो	चन्द्र	— चन्द्रमा की
हृत	— हृदय रूपी	मरीचि	— किरणों के
सरौजम्	— कमल को	चक्रम्	— समूह का
ओजो	— प्रकाश	आचम्य	— स्वाद
विजृभय	— चमकाओ	सम्यक	— अच्छी प्रकार
निजं	— अपने	अमृती	— अमृत से
नरिनर्तय	— नचाओ	कुरू	— भर दो
अङ्गम्	— अंगो को	विश्वमेतत्	— इस सारे विश्व को

भावार्थ

हे मेरी बुद्धि रूपी चकोर। मेरे दुखों का नाश कर दो। मेरे हृदय रूपी कमल को विकसित करो। अपने प्रकाश को चमकाओ, अपने अंगों को नचाओ, चितिरूपी चन्द्रमा की किरणों के समूह का स्वाद ले लो तथा इस सारे विश्व को अमृत[1] से अच्छी प्रकार भर दो।

1) Nector of spiritual awareness.

यावत् समाधौ न वृजेत लयं मनो
यावत् चिदानन्द रसं न चर्वेत्
यावत् न पश्येत् शिवतामयम् जगत
तावत कथं बोधमयी दशा परा

शब्दार्थ

यावत्	— जब तक	यावत्	— जब तक न
समाधौ	— समाधि में	पश्येत	— देखा जाए
न व्रजेल्लयम्	— न लग जाए	शिवतामयम्	— शिव रूप ही इस
मनो	— मन	जगत	— जगत को
यावत्	— जब तक	तावत्	— तब तक
चिदानन्द	— चिदानन्द का	कथं	— कैसे
रसं	— रस	बोधमयी	— ज्ञान मयी
न चर्वेत्	— न सेवन किया जावे	दशापरा	— परा दशा

भावार्थ

जब तक समाधि में मन न लग जाए जब तक चित् आनन्द रस का सेवन न किया जाए जब तक न इस जगत को शिव रूप ही देखा जाए तब तक कैसे ज्ञानमयी परादशा[1] आ जाएगी।

---

1 State of Highest Bliss.

प्रकाशमाने परमार्थ भानौ
नश्यत्यविद्या तिमरे समस्ते
तदा बुधा निर्मलदृष्टयोऽपि
किंचिन्न पश्यन्ति भव प्रपञ्चम्

शब्दार्थ

प्रकाशमाने	— चमकता है	दृष्टियोऽपि	— दृष्टि वाले पुरुष
परमार्थ भानौ	— परमार्थ (उत्कृष्ट ज्ञान) का सूर्य	किञ्चिन न	— कुछ भी नहीं
		पश्यन्ति	— देखते हैं

नश्यत्यविद्या	— अज्ञान नष्ट होता है	भव	— संसार के
तिमिरे समस्ते	— पूरा अन्धेरा	प्रपञ्चम्	— भेदमय प्रपंच को
बधुाः	— बुद्धिमान लोग (ज्ञानवान)		
निर्मल	— शुद्ध		

भावार्थ

जब परमार्थ का सूर्य चमकता है और अज्ञान का पूरा अन्धकार नष्ट होता है तब बुद्धिमान तथा निर्मल दृष्टि वाले ज्ञानवान पुरुष[1] संसार के भेदमय प्रपञ्च को कुछ नहीं देखते है ।

1) Perfect self realized being.

प्रकाशमानम् न पृथक प्रकाशात्
स च प्रकाशो न पृथक विमंशात्
नान्यो विमर्शोऽहमिदि स्वरूपात्
अहं विमर्शोऽस्मि चिदेक रूपः

शब्दार्थ

प्रकाशमानम्	— प्रकट जो दिखाई देते हैं (पदार्थ)	अहम्	— अहं
न प्रथक प्रकाशात्	— नहीं भिन्न प्रकाश से	विमर्शोऽस्मि	— विमंश है
न प्रथक विमंशात्	— नहीं भिन्न विमर्श से	चिदेक	— केवल चिद्
नान्यो	— नहीं रखता है (भिन्नता)	रूपः	— रूप ही
विमर्शो	— विमर्श से		
स्वरूपात	— स्वरूप से		

भावार्थ

सव पदार्थ[1] प्रकाशमान होने के कारण प्रकाश से भिन्न नहीं है। प्रकाश विमर्श से भिन्न नहीं है। विमर्श भी अहं रूप से भिन्नता नहीं रखता अतः अहं विमर्श केवल चिद् रूप[2] ही है।

1) Illumined object 2) Conscious Self.

प्रकाशमानां प्रथमे प्रयाणे प्रतिप्रयाणेऽमृततोयरूपाम्
अन्तः पद व्यामनुसञ्चरन्तीमानन्द रूपामबलां प्रपद्ये।

शब्दार्थ

प्रकाशमानां	— प्रकाशमय
प्रथमे प्रयाणे	— पहिले ही सफल प्रयास से
प्रति प्रयाणे	— निरन्तर प्रयास (अनुग्रह) से
अमृततोयरूपाम्	— चित् अमृत बरसाने वाली
अन्तः पदव्याम्	— समावेशात्मक लक्ष्य पर
अनुसञ्चरन्तीम्	— अनुसरण कराने वाली
आनन्द रूपाम्	— आनन्द रूप मयी
अबलां	— भेदमयी माता
प्रपद्ये	— प्रणाम करता हूं

भावार्थ

पहिले ही सफल प्रयास से प्रकाशमय प्रतीत होने वाली निरन्तर प्रयास से चिदमृत बरसाने वाली समवेशात्मक लक्ष्य पर अनुसरण कराने वाली आनन्द रूप मयी भगवती को प्रणाम करता हूं (जब तक प्रकाशात्मक अवस्था नहीं आती तब तक अनेक नामों में माता का अबला (भेदमयी) नाम भी दिया गया है।)

भवन्मय स्वात्मनिवास लब्ध-
सम्पद्भराभ्यर्चित युष्मदंघ्रिः
न भोजनाच्छादनमप्यजस्त्र-
मपेक्षतेयस्तमहं नमामि ।

शब्दार्थ

भवन्मय	— आपके पूर्ण रूप का	न भोजन	— न भोजन
स्वात्मनि	— अपने चित्स्वरूप में	आच्छादनम्	— वस्त्र तथा छद्र
वास	— निवास (विश्रान्ति पाने से)	अपि अजस्रम	— भी लगातार
		अपेक्षते	— अपेक्षता नहीं रखता
लब्ध	— प्राप्त हुई		
संपद्भराभ्यर्ति	— परमानन्द रूपी सम्पदा की अधिकता से	यः तम्	— जो भक्त उसको
		अहं	— मैं
युष्मदंघ्रि	— आपके चरणों की पूजा	नमामि	— प्रणाम करता हूं।

भावार्थ

मैं उस शिव भक्त को प्रणाम करता हूं जिसको न भोजन की, न वस्त्र की, न छद्र की अपेक्षा रहती है; क्योंकि उसको पूर्ण चिदानन्द अपने चित्स्वरूप में विश्रांति पाने से तथा ऐसी सम्पदा की अधिकता से आप के चरणों की पूजा का परमानन्द् प्राप्त हुआ है।

---

1) The bliss of Universal Consciousness

निर्मान मोहा जितसंग दोषा
अध्यात्म नित्या विनिवृति कामाः

द्वन्दैर्विमुक्ताः सुख दुख संज्ञै-
र्गच्छन्तयमूढाः पदमव्ययं तत्

शब्दार्थ

निर्मान	— (देह अभिमान) दूर हुआ है
मोहा	— मोह
जित	— जीता है
संगदोषा	— आसक्ति रूप दोषों को
अध्यात्म	— अध्यात्मिक (आत्म परायण)
नित्या	— लगातार
विनिवृतिकामः	— सभी अभिलाषाएँ त्याग दी हैं।

द्वन्दै विमुक्ता	— द्वन्दों को त्याग दिया है
सुख दुख	— सुख तथा दुख (संसारी बन्दन)
संज्ञैर	— नाम वाले
गच्छन्ति	— प्राप्त करते हैं
अमूढाः	— बुद्धिमान
पदमव्ययं तत्	— वह अविनाशी पद

भावार्थ

ऐसे बुद्धिमान (भाग्य शाली) पुरुष उस अविनाशी पद को प्राप्त कर सकते हैं जिनका मोह दूर हो गया है। आसक्तिरूप दोषों को जीत लिया है। जो नित्य आत्म परायण हैं। जिन्होंने सभी अभिलाषाओं का त्याग किया है। जो सुख दुख नाम वाले द्वन्दों से रहित हैं।

सर्वस्य चाहं हृदि सन्निविष्टो
मत्तः स्मृतिर्ज्ञानमपोहनं च
वेदैश्च सर्वैरहमेव वेद्यो
वेदान्तकृद्वेद विदेव चाहम्

शब्दार्थ

सर्वस्य च	— सब इत्यादि (प्रकाश विर्मष रूप)	सर्वैर	— सभी शास्त्र
		अहमेव	— अहं रूप के ही
अहं	— मैं (अहं रूप)	वेद्यो	— स्वरूप को दिखाते हैं
हृदि	— हृदय में	वेदान्त	— वेदान्तों का
सन्निविष्टो	— ठहरा हूं	कृत	— बनाने वाला
मत्तः	— मेरे सामर्थ्य से	वेद	— वेदों का
स्मृति	-- स्मृति	विदेव	— जानने वाला
ज्ञानम्	— ज्ञान	अहम्	— मैं ही हूं
अपोहनम्	— अपोहन शक्तियां		
च	— भी		
वेदैश्च	— वेद तथा		

भावार्थ

प्रकाश विमर्श रूप मैं सब के हृदयों में ठहरा हूं। मेरे ही सामर्थ्य से स्मृति, ज्ञान, अपोहन शक्तियां काम करते हैं। वेद तथा सभी शास्त्र अहं रूप के स्वरूप को दिखाते हैं। वेदान्त तथा वेदों का बनाने वाला तथा जानने वाला भी मैं ही हूं।

कौलार्णवानन्द घनोर्मि रूपा-
मुन्मेषमेषो भय भाजमन्तः
निलीयते नील कुला लेयया
तां सृष्टि काली सततं नमामि।

शब्दार्थ

कौलार्णव	— ३६ तत्त्व रूपीसागर	नीलकुला	— नील पीत इत्यादि (पदार्थों में)
आनन्द	— आनन्दभरी		

घनोर्मि	— लहर	लये	— लय हो जाती हैं
रूपाम्	— रूप है	या	--- जो
उन्मेषमेषो	— जो उन्मेष और निमेष	तां	— उस भगवती
उभय	— दोनों को	सृष्टि काली	— सृष्टि काली (संविद्देवो) को
भाजमन्त	— भाजती है (अभ्यास)	सततं	— हर समय
निलीयते	— समाविष्ट होता हूं	नमामि	— नमस्कार करता हूं

भावार्थ

जो ३६ तत्त्वों के कुल रूपी सागर में आनन्दरूपी लहर है। जो उन्मेष[1] और निमेष[2] दोनों का अपने ही स्वरूप में अभ्यास[3] करती है। जो नील पीत इत्यादि विद्य वर्ग[4] में लय हो जाती है ? ऐसी उस संवित् भगवती को मैं हर समय नमस्कार करता हूं तथा उसी में समाविष्ट होता हूं।

---

1) विकास unfoldment. 3) emanation
2) संकोच dissolution. 4) objective world.

सर्वार्थं संकर्षण संयमस्य
यमस्य यन्तुजगतो यमाय
वपुर्महाग्रास विलास सक्तं
संकर्षयन्तीं प्रणामि कालीम्

शब्दार्थ

सर्वार्थं	--- सभी विषयों या पदार्थों को	महाग्रास	— महाग्रास
		विलास	— महा विलास
संकर्षण	— विकास में लाती है	सक्तं	— शक्तिमान जो है

सयंमस्य	— सयंम करती है	संकर्षयन्तीं	— उल्लेख करने वाली
यमस्य	— इस यम रूप का	प्रणमामि	— प्रणाम करता हूं
यन्तुर	— नियमन करने वाली	कालीं	— महाकाली को
यमाय	— यम ही		
वपुर	— रूप वाली		
जगतो	— जगत की		

भावार्थ

जिस प्रकार सब पदार्थों (विषयों) को विकास में लाती है तथा सयंम करती है उसी प्रकार नियमन करने वाली जगत की यम रूप वाली महाकाली महाग्रास और विलास करती है ऐसी परा रूप वाली भगवती (जो इस सब जगत का संकर्षण करती है) को प्रणाम करता हूं।

मार्ताण्डमापीत पतंग चक्रं
पतंगवत्काल कलेन्धनाय
करोति या विश्वरसान्तकां तां
मार्तण्ड कालीं सततं प्रणौमि ।

शब्दार्थ

मार्ताण्डम्	— चित् सूर्य (संवित् भगवती)	विश्वरसान्तकाम	— विषयों (पदार्थों) के रस को
आपीत	— लीन करती है (निमेष में लाती है)	तां	— उस
		मार्तण्ड	— चित् सूर्य रूपी
पतङ्ग	— पतंगों का (इन्द्रियों का)	कालीम्	— काली भगवती को
चक्रम्	— चक्र	सततं	— हर समय
पतङ्गवत्	— पतंगा की तरह	प्रणौमि	— प्रणाम करता हूं
काल कलेन्धनाय	— दीपक पर जलाता है		

करोति — करती है
या — जो भगवती

भावार्थ

इन्द्रिय रूप पतंगों के चक्र को जो अपने स्वरूप में लीन करती है जैसे पतंगा दीपक पर अपने आप को जलाता है तथा विषयों के रस को अपने स्वरूप में लीन कराने वाली ऐसी मार्तण्ड काली को मैं प्रणाम करता हूं; उसी चित् सूर्य संवित् भगवती में समावेश करता हूं ।

---

1) Involution

क्रमत्रय त्वाष्ट्र मरीचिचक्र
सचांर चातुर्यं तुरीयसत्ताम्
वन्दे महा भैरव घोर चण्ड-
कालीं कलाकाश शशाङ्क कान्तिम्

शब्दार्थ

क्रम — क्रमों से
त्रय — तीन (प्रमाता, प्रमाण, प्रमेय)[1]
त्वाष्ट्र — सूर्य की
मरीचि — किरणें (प्रकाश)
चक्रम् — चक्र
सचांर — संचार
चातुर्यं — चतुरता
तुरीय — तुरीय[2]
सत्ताम् — सत्ता (अवस्था)

वन्दे — प्रणाम करता हूं
महा भैरव — महा भैरव को
घोर — घोर
चण्डकालीं — चण्ड काली
कलाकाश — चित् आकाश में (अमा कला)
शशांक — चन्द्रमा की तरह
कान्तिम् — चमकती है ।

भावार्थ

तोन क्रमों से जिस भगवती ने सूर्य जैसे प्रकाश के संचार में चतुरता से तुरीय सत्ता धारण की है उस महा भैरव घोर चण्डकाली (संवित् भगवती) को नमस्कार करता हूं जिसकी (अमा कला) चित आकाश में चन्द्रमा की भान्ति चमकता है ।

---

1) प्रमाता=Subject or knower.
प्रमाण=means of Knowledge or proof.
प्रमेय=object of Knowledge or known.

2) तुरीय=Integral awareness is fourth state of consciousness.

स्वानन्दतस्त्रिभुवनं कवलं विधाय
स्वात्मानमप्य तितरां समदा ग्रसन्ती
तृप्ता तथाप्यऽपरिखण्डित नित्य सिद्ध-
स्वातन्त्र्य पूर्ण विभवा कृश मूर्तिरव्यात्

शब्दार्थ

स्वानन्द	— अध्यातमिक सुख	तृप्ता	— तृप्त होकर
त्रिभुवनम्	— तीन भवनों को	तथापि	— और भी
कवलं	— ग्रास	अपरिखण्डित	— पूर्ण रूप से
विधाय	— करके	नित्य	— सदा
स्वात्मानम्	— अपनी आत्मा में	सिद्ध	— सिद्ध
अपि	— भी	स्वातन्त्र्य	— स्वतन्त्र
तितरां	— अधिकता से	पूर्ण	— पूर्ण रूप
समदां	— मद सहित (हृष से)	विभवा	— दीप्ति से

ग्रसन्ती	— ग्रास करती है	कृश मूर्ति	— सूक्ष्म
		अव्यात्	— नाश विना व्याप्त है

भावार्थ

(जो शक्ति) अपने आनन्द से ही तीनों भुवनों का ग्रास बनाकर अपने आप में ही अत्यधिक (मद) आनन्द का चर्वन करती हुई स्वत: तृप्त होती हुई और भी पूर्ण रूप से सदा सिद्ध, स्वतन्त्र तथा पूर्ण दीप्ति युक्त सूक्ष्म रूप में अविनाशी होकर भी अव्यय रूप है।

पुष्णेन्देवानमृत विसरैरिन्दुमास्राव्य सम्य-
ग्भाभि स्वाभिः रसयति रसं यः परं नित्यमेव
क्षीणं क्षीणं पुनरपि च तं पूरयत्येवमीदृ-
ग्दोलालीलोल्लसित हृदयं नौमि चित् भानुमेकम्

शब्दार्थ

पुष्णेन्देवान	— पुष्टि देने वाला (इन्द्रियों को)	क्षीणम् क्षीणम्	घटते घटते
अमृत	— अमृत	पुनरपि	— दुबारा भी
विसरैं	— प्रवाह के द्वारा	पूरयत्येवम्	— बढ़ाता ही है
इन्दुम	— चन्द्रमा की कलाओं को	चतं	— और उसको
अस्राध्य	— घटा कर (सूक्ष्म बनाकर)	इदृक्	— इस प्रकार
		दोलालीलो	— झूले की क्रीड़ा की तरह
सम्यक्	— पूरी तरह से		
भाभिः	— दीप्ति से	उल्लसित	— उल्लास में लाता है
स्वाभिः	— अपनी	हृदयम्	— हृदय को
रसयति	— रस से भर लेती है	नौमि	— प्रणाम करता हूं

रसम्	— रस (अर्थात् अमाकला)	चित	— चित
यः	— जो	भानुम्	— सूर्य
परम्	— उत्कृष्ट	एकम्	— केवल एक को
नित्यमेव	— नित्य ही		

शब्दार्थ

जो इन्द्रियों को पुष्टि देने वाला चन्द्रमा की कलाओं को घटा घटा कर पूर्ण रूप से अपनी दीप्ति रूपो अमृत प्रवाह के द्वारा चन्द्रमा की कलाओं को सूक्ष्म बनाकर पूरी तरह अपनी दीप्ति से उत्कृष्ट रस से (अमा कला द्वारा) रसायन करता है जो नित्य घटते घटते पुनः उसको बढ़ाता ही है। इसी तरह झूले की क्रीड़ा की भान्ति (लोगों के) हृदयों को उल्लास में लाता है ऐसे उस अकेले चित सूर्य को प्रणाम करता हूं।

विद्यां परां कतिचिदम्बरमम्बकेचि-
दानन्दमेव कतिचित्कतिचिच्च मायाम्
त्वां विश्वमाहुरपरे वयमामनाम
साक्षात् अपार करुणां गुरुमूर्त्तिमेव।

शब्दार्थ

विद्याम्	— विद्या रूप	मायाम्	— माया रूप
पराम्	— परा विद्या।	त्वाम्	— आपको
कतिचित्	— कुछ भक्तजन	विश्वम्	— जगतरूप
अम्बरम्	— आकाश (चित्)	आहुर	— कहते हैं
अम्ब	— हे माता	अपरे	— पर
केचित्	— कुछ	वयम्	— हम
आनन्दम्	— आनन्द रूप	आमनाय	— मानें गे

एव	— ही	साक्षात्	— प्रत्यक्त
कतिचित्	— कुछ	अपार	— अपार
कतिचित् च	— कुछ और भक्त	करूणाम्	— दयालु
		गुरु मूर्तिम्	— गुरू रूप
		एव	— ही

भावार्थ

हे जगत जननी ! कुछ भक्तजन आपको परा विद्या रूप, कुछ चित् आकाश रूप, कुछ आनन्दरूप, कुछ माया रूप, कुछ जगत रूप कहते हैं। पर हम आपको अपार दया, गुरु रूप ही कहें गे।

---

1) परा=चित् आनन्द (Supreme Stage of Consciousness)
पश्यन्ती=इच्छा शक्तिरूप (undifferentiated form) (अव्यक्त)
मध्यमा=ज्ञान शक्ति रूप (Subtle form) (व्यक्ताव्यक्त)
वैखरी=क्रिया शक्ति (Gross Physical Word) (व्यक्त)

ब्रह्मेन्द्ररुद्र हरिचन्द्र सहस्ररश्मि
स्कन्द द्विपानन हुताशन वन्दितायै
वागीश्वरि ! त्रिभुवनेश्वरि ! विश्वमात-
रन्तर्बहिश्च कृत संस्थितये नमस्ते ।

शब्दार्थ

ब्रह्म	— ब्रह्म	वन्दितायै	— प्रणाम (बन्दना) की जाती है
इन्द्र	— इन्द्र		
रुद्र	— शिव	वाक्इश्वरि	— परा शक्ति रूप
हरि	— विष्णु	त्रिभुवनेश्वरि	— तीनों भुवनों की ईश्वरी
चन्द्र	— चन्द्र		

सहस्त्ररश्मि	— सूरज	विश्वमातः	— आपको (हे देवी)
स्कन्द	— कुमार	अन्तर	— अन्दर हे भक्तजन धन्य
द्विपानन	— गणेश	बहिश्च	— बाहिर
हुताशन	— अग्नि	कृतसंस्थितये	— ठहरी हुई ले ही
		नमस्ते	— प्रणाम करते हैं की

भावार्थ

हे परा शक्ति । हे तीनों भुवनों की इश्वरी । हे जगत माता आप को ब्रह्मा, इन्द्र, शिव, विष्णु, चन्द्रमा, सूर्य, कुमार, गणेश, अग्नि द्वारा प्रणाम किया जाता है । अतः अन्तः करणों तथा बहिष्करणों में स्थित आप को प्रणाम हो ।

ददातीष्टान्भोगान्क्षपयति रिपुन् हन्ति विपदो
दहत्याधीन व्याधीन शमयति सुखानि प्रतनुते
हठादन्तर्दुखं दलयति पिनष्टीष्ट विरहं
सकृद्धयाता देवी किमिवमिरवद्यं न कुरुते ।

शब्दार्थ

ददाति	— देती है	हठात्	— बलपूर्वक
इष्टान्	— इच्छा अनुसार	अन्तर	— अन्तःकरण के
भोगान्	— भोगों को	दुखम्	— दुखों को
क्षपयति	— नाश करती है	दलयति	— फाड डालती है
रिपुन्	— शत्रुओं को	पिनष्ट	— पीसती हैं
हन्ति	— नष्ट करती है	इष्ट	— इष्टों के
विपदो	— विपदाओं को	विरहम्	— वियोग को
दहति	— जलाती है	सकृत	— तुरन्त
आधीन	— मन के रोग	ध्याता	— ध्यान करने पर

व्याधीन	— शरीर के रोग	देवी	— देवी
शमयति	— शान्त करती है	किम्	— कौन
सुखानि	— सुखों को	इव	— सी
प्रतनुते	— फैलाती है	निरवंद्यम्	— दोष रहित
		कुरुते	— करती है ।

भावार्थ

ध्यान करने पर देवी कौन सी बात दोष रहित नहीं करती हैं (जैसे) इच्छा अनुसार भोगों को देती है, शत्रुओं का नाश करती है, विपदाओं को जलाती है, मन तथा शरीर के रोगों को शान्त करती है। सुखों को विस्तारती है अन्तः करण के दुखों को फाड़ डालती है इष्ट (प्यारों) के वियोग को पीसती है, नष्ट करती है।

सुधा सिन्धोर्मध्ये सुरविटपि वाटी परिवृते
मणिद्वीपे नीपो पवन वति चिन्तामणि गृहे
शिवाकारे मञ्चे परमशिव पर्यङ्क निलयां
भजन्ते त्वां धन्याः कतिचन चिदानन्दलहरीम्

शब्दार्थ

सुधा	— अमृत	चिन्तामणि	— चिन्तामणि रत्नों से
सिन्धोर	— सागर	गृहे	— घर में
मध्ये	— बीच में	शिवाकारे	— शिवरूप
सुरविटपि	— कल्पवृक्षों की	मञ्चे	— मञ्च पर
वाटी	— वाटिका	परमशिव	— परमशिव (रूप)
परिवृते	— घिरे हुए (Surrounded)	पर्यन्ङ्क	— पलंग
		निलयाम्	— विराजमान्
मणि	— मणि	भजन्ते	— ध्यान करते हैं

द्वीपे	— रत्नों	त्वां	— आपको (हे देवी)
नीपो	— टापू पर	धन्याः	— वह भक्तजन धन्य हैं
पवन	— कदम्ब वृक्ष	कतिचन	— कई विरले ही
वति	— युक्त	चिदानन्दलहरीम्	- चित् आनन्द की लहरी रूप

भावार्थ

अमृत सागर के बीच में कल्पवृक्षों की वाटिका से घिरे मणि रत्नों के टापू पर कदम्ब वृक्षों से युक्त चिन्तामणि रत्नों से बने घर में शिवरूप मञ्च पर परम शिवरूप पलंग पर विराजमान चित् और आनन्द[1] की लहरी रूप ऐसे आप के स्वरूप का कई विरले भक्त जन ध्यान करते हैं।

---

1) ज्ञान और भक्ति

मनुष्यास्तिर्यञ्चो मरुत इति लोक त्रयमिदं
भवाम्बोधौ मग्नं त्रिगुण लहरी कोटि लुठितम्
कटाक्षश्चेदत्र क्वचन तव मातः। करुणया
शरीरे सद्योऽयं व्रजति परमानन्दतनुताम्

शब्दार्थ

मनुष्याः	— मनुष्य	कटाक्षः	— दया दृष्टि
तिर्यञ्चो	— पशुपक्षी	चेद् अत्र	— इन में से यदि हो
मरुतः	— देवता आदि	क्वचन	— किसी एक पर
इति	— इस प्रकार	तव	— आप की
लोकत्रयम्	— तीन लोक	मातः	— हे माता

इदम्	— यह	करुणयां	— करुणा (दया)
भवाम्बोधौ	— संसार सागर	शरीरी	— जीव
मग्नम	— डूबा हुआ	सद्यो	— शीघ्र ही
त्रिगुण	— तीगुण (सतोगुण) (रजोगुण) (तमोगुण)	अयं	— वह
		व्रजति	— प्राप्त होते हैं
लहरी	— लहरों	परमानन्द	— परमानन्द
कोटि	— करोड़ों	तनुताम	— स्वरूप भाव को
लुठितम्	— व्याकुल हुआ		

भावार्थ

तीन गुणों की करोड़ों लहरों से व्याकुल बना हुआ मनुष्य पक्षी पशु आदि देवता समूह संसार सागर में डूबा हुआ है। हे माता ! इन में से किसी एक पर यदि आप की अनुग्रह दृष्टि हो तो वह जीव उसी क्षण परमानन्द स्वरूप भाव को प्राप्त होता है।

तड्द्वल्लीं नित्याममृत सरितं पार रहितां
मलोत्तीर्णां ज्योत्स्नां प्रकृतिमगुण ग्रंथि गहनाम्
गिरां दूरां विद्यामविनत कुचां विश्वजननी-
मपर्यन्तां लक्ष्मीमभिदधति संतो भगवतीम्

शब्दार्थ

तडित्	— बिजली	गिराम्	— वानी से
वल्लीम्	— कड़क (थर)	दूरां	— परे
नित्याम्	— अचल	विद्याम्	— ज्ञान रूप
अमृत	— अमृत (चिदमृत)	अविनत	— न झुके हुए
सरितम्	— नदी	कुचाम्	— स्तनों वाली[2]
पार रहिताम्	— अपार	विश्वजननी	— जगत माता
मल	— मलों के	अपर्यन्ताम्	— सीमा रहित

उर्त्तीणाम्	— परे (उपर)	लक्ष्मीम्	— लक्ष्मी
ज्योत्स्नाम	— चांदनी	अभिदधति	— अभिनन्दन (पुकारते हैं)
प्रकृतिम्	— प्रकृति के		
अगुनग्रन्थिगहनाम्	— गुणों के घने झण्डों से रहित	संत	— संत पुरुष
		भगवतीम्	— देवी को

भावार्थ

संत लोग देवी को बिजली की कड़क रूप अपार चिदमृत की नदी रूप, गुणों की ग्रंथियों रहित प्रकृति रूप वाणियों से परे ज्ञान रूप, न झुके (ज्ञान क्रिया)(प्रकाश, विमंश) रूप स्तनों वाली जगत जननी, सीमा रहित लक्ष्मी रूप, ऐसे अनेक नामों से पुकारते हैं।

---

1) सतोगुण=Harmony (purity)
   रजोगुण=dishormony (activity)
   तमोगुण=delusion (inertia)
2) प्रकाश=Consciousness
   विमंश=Experience full of ज्ञान and क्रिया

असंख्यै प्राचीनै जननि जननै कर्म विलयात्
गतेजन्मन्यन्तं गुरु वपुषमासाद्य गिरिशम्
अवाप्याज्ञां शैवीं क्रमतनुरपि त्वां विदितवा-
न्नयेयं त्वत्पूजा स्तुति विरचनेनैव दिवसान्

शब्दार्थ

असख्यै	— असंख्य	आज्ञां	— आज्ञा
प्राचीने	— पिछले	शैवीम्	— शैव सिद्धान्त को

जननि	— हे माता	क्रमतनुः	— मनुष्य शरीर धारण करता हुआ
जननै	— जन्मों द्वारा	अपि	— भी
कर्मविलयात्	— कर्म के नष्ट होने पर	त्वाम्	— तुम्हारी
गते	— गए हुए (प्राप्त किए हुए)	विदितवान्	— मनन करके जानता रहूं
जन्मनि अन्त	— जन्मों का अन्त	नयेयम्	— व्यतीत करूं
गुरुवपुषम्	— गुरुवर के स्वरूप को	त्वत्	— तुम्हारी
आसाद्य	— प्राप्त करके	पूजास्तुति	— पूजा तथा स्तुति
गिरिशम्	— शिव को	विरचनेन एव	बनाने तथा करने में ही
अवाप्य	— पाकर	दिवसान्	— शेष दिन

भावार्थ

हे माता ! पिछले असंख्य जन्मों द्वारा कर्मों के नष्ट होने पर जन्मों का अन्त अर्थात् जीवन्मुक्त दशा प्राप्त करके गुरुवर के स्वरूप में शिव को प्राप्त करके शैव सिद्धान्त (अद्वैत मार्ग) को पाकर मनुष्य शरीर धारण करता हुआ भी आपको जानता रहूं तथा तुम्हारी स्तुति तथा पूजा करने में ही इस जन्म के शेष दिन व्यतीत करूं।

प्रकाशानन्दाभ्यामविदित चरीं मध्यपदवीं
प्रविश्यैतद्वन्द्वं रविशशिसमाख्यं कवलयन्
प्रविश्योर्ध्वं नादं लयदहन भस्मीकृतकुलः
प्रसादात्ते जन्तुः शिवमकुलमम्ब ! प्रविशति ।

शब्दार्थ

प्रकाश आनन्दाभ्याम्	चित् और आनन्द द्वारा	नादम्	— नाद में
		लयदहन	— लय हुई अग्नि से

अविदितचरीम्	—पहले अच्छी तरह न जानी हुई	भस्मी	— भस्म
मध्यपदवीम्	— संवित्[1]	कृम	— किए हुए
प्रविश्य	— प्रवेश करके	कुलः	— तत्त्वों वाला
ऐत द्वन्द्वम्	— इस जोड़े को	प्रसादाति	— अनुग्रह से
रविशशि	— सूर्य चन्द्रमा[2]	ते	— तुम्हारे
समाख्यम्	— नाम वाले	जन्तुः	— जीव
कवलयन	— ग्रास करता हुआ	शिवम्	— शिव में
प्रविश्य	— प्रवेश करके	अकुलम्	— तत्त्वों से परे
उर्ध्वम्	— उपरी	अम्ब	— हे माता
		प्रविशति	— प्रवेश करते हैं

भावार्थ

हे माता ! पहले अच्छी प्रकार न जानी हुई संवित् में चित् (प्रकाश) और आनन्द द्वारा प्रवेश करके सूर्य और चन्द्रमा (पाण, अपान) के जोड़े को ग्रास करता हुआ उपरी नाद में प्रवेश करके आत्म साक्षात-कार रूप अग्नि से सभो तत्त्वों को भस्म किए हुए (योगी) जीव आप के अनुग्रह से तत्त्वों को उलङ्गा हुआ शिव रूप ही बन जाता है ।

1+2) (सुशम्ना नाडो इडा और पिंगला के बीच में विकसित होकर मध्यपदवी (सुषम्ना) द्वारा चिदानन्द प्राप्त होता है अर्थात् शिव रूप हीं बन जाता है)

पिता माता भ्रातासुहृदऽनुचरः सद्म गृहिणी
वपुः पुत्रो मित्रं धनमपि यदा मां विजहति
तदा मे भिन्दाना सपदि भय मोहान्धतमसं
महाज्योत्स्ने ! मार्तभव करुणया सन्निधिकरी

शब्दार्थ

पिता	— पिता	यदा	— जिस समय (Life's end)
माता	— माता	मां विजहति	— मुझे त्याग देंगे
भ्राता	— भाई	तदा में	— तो उस समय मेरे
सुहृद	— मित्र (प्रेमी)	भिन्दानां	— नाश करती हुई
अनुचर	— नौकर	सपदि	— शीघ्र
सद्म	— घर	भयमोह अन्ध तमसम्	— भय और मोह से अन्धा बना हुआ
गृहिणी	— पत्नी	महाज्योत्स्ने	— हे महाप्रकाशमयी
वपुः	— शरीर	मात;	— माता
पुत्रो	— पुत्र	भव	— हो जाए
मित्रम्	— मित्र	करुणया	— दया करके
धनमपि	— धन भी	सन्निधिकरी	— प्रत्यक्ष प्रकट

भावार्थ

पिता, माता, भ्राता, प्रेमी, नौकर, घर, पत्नी, शरीर, पुत्र, मित्र, और धन भी मरणकाल पर जब मेरा (साथ) छोड़ देंगे तो उस समय दया करके मेरे भय और मोह अन्धकार को नाश कर दीजिए तथा शीघ्र प्रत्यक्ष रूप प्रकट हो जाइए।

प्रलीने शब्दौघे तदनु विरते बिन्दु विभवे
ततस्तत्त्वे चाष्टध्त्रमिभिरनुपाधिन्युपरते
श्रिते शक्ते पर्वण्यनुकलित चिन्मात्र गहनां
स्वसंवित्ति योगी रसयति शिवाख्यां परतनुम्

शब्दार्थ

प्रलीने	— लय हो जाने पर	अनुकलिता	— अच्छी प्रकार विमर्श से पहचानी हुई
शब्द	— नाद	चिन्मात्र	— चैतन्य रूप
ओघं	— समूह	गहनाम्	— अति सूक्ष्म
तत् अनु	— इसके पश्चात्	स्वसंविति	— अपनी संवित (पूर्ण अहन्ता को)
विरते	— हट जाने पर	योगी	— उत्तम योगी पुरुष
बिन्दु	— बिन्दु का	रसयति	— मजा लेता है
विभव	— वैभव	शिव	— शिव
तत्तः	— उसके बाद	आख्याम्	— नाम वाली शक्ति
तत्त्वेच	— तत्त्व के	परतनुम्	— उत्तम स्वरूप
अष्टध्वनिभिः	– आठ वर्गों की[1]		
अनुपाधिनि	— उपाधि रहित		
उपरते	— शांत हो जाने पर		
श्रिते	— आश्रय लेने पर		
शाक्ते	— शक्ति की		
पर्वणि	— अवस्था		

भावार्थ

नाद समूह लय हो जाने पर इसके पश्चात् बिन्दु के हट जाने पर तत्पश्चात् तत्त्वों के आठ वर्गों की उपाधि रहित शांत हो जाने पर विमर्श से शक्ति की अवस्था अच्छी प्रकार पहचानी हुई अति सूक्ष्म चैतन्य रूप अपनो संवित् शक्ति के द्वारा उत्तम योगी पुरुष शिवनाम वाली शक्ति के उत्तम स्वरूप का आनन्द लेते हैं।

---

1) मात्रिका के अष्ट वर्ग :

१) अं—आः	५) त वर्ग
२) क वर्ग	६) प वर्ग
३) च वर्ग	७) य—व
४) ट वर्ग	८) श—ह

यदक्षरपद भ्रष्टं मात्राहीनं च यद्गतम्
त्वया तत् क्षम्यतां देवी कृपया परमेश्वरि

शब्दार्थ

यद्	— जिस (श्लोक या स्तुति)	क्षम्यतां	— क्षमा करें
अक्षरपद	— अक्षरों के पद	देवी	— हे देवी
भ्रष्ट	— पूरे नहीं हो गए हूंगे	कृपा	— कृपा करके
मात्रा	— (जहां) मात्राओं की	परमेश्वरि	— परमेश्वरि
हीनं	— त्रुटियां		
च यदगतम्	— भी जहां हुई हूंगी		
त्वया	— आप		
तत्	— उनको		

भावार्थ

हे परमेश्वरी देवी ! जिस (श्लोक या स्तुति) में अक्षर पद या मात्राओं की त्रुटियां रह गई होंगी उस को आप कृपया क्षमा करें ।

यो विचित्र रससेक वर्धित; शङ्करेति शतशोऽप्युदीरितः
शब्द आविशति तिर्यगाशयेष्वप्ययं नवन प्रयोजनः

शब्दार्थ

यः	— जो	उदीरित	— उच्चारण किया हुआ
विचित्र	— अनूखे		
रस	— आनन्द रस के	शब्द	— शब्द
सेक	— सींचने से	आविशति	— स्फुरित होता है

वर्धित	— बढ़ गया है	तिर्यगाशयेषु	— पशु योनि में पड़े हुए
शङ्कर-इति	— शिव ऐसे ही	अपि	— भी
शतशः-अपि	— सैंकड़ो प्रकार से भी	अयं	— यह
		नवनव	— नए नए (अपूर्व)
		प्रयोजनः	— प्रयोजन से युक्त

भावार्थ

अनूखे आनन्द रस से सींचा हुआ अतः वृद्धि को प्राप्त हुआ और सैकड़ों बार उच्चारण में लाया हुआ जो यह शिव शब्द मूर्खो के हृदयों (पशु योनि में पड़े हुए अर्थात् अल्पज्ञ) में भी अपूर्व चमत्कार से युक्त प्ररिस्फुरित होता हैं ।

ते जयन्ति मुख मण्डले भ्रमन्
अस्ति येषु नियतं शिवध्वनिः
यः शशीव प्रसृतोऽमृताशयात्
स्वादु संस्रवति चामृतं परम् ।

शब्दार्थ

ते	— वे	यः शशीव	— जो चन्द्रमा की भान्ति
जयन्ति	— जय जय कार के योग्य हैं	प्रसृता	— प्रसरित होता है
मुखमण्डले	— मुख मण्डल में	अमृताशयात्	— अमृतमय कला से
भ्रमण	— घूमती	स्वादु	— मीठा
अस्ति	— है	संस्रवति	— अच्छी प्रकार बहाता है
येषु	— जिनके		
नियतम्	— निश्चित रूप से	च अमृतम्	— और अमृत
शिव ध्वनि	— शिव ध्वनि	परम	— उत्कृष्ट

वे (लोग) जय जयकार के योग्य हैं जिनके मुख मण्डल में निश्चित रूप में शिव ध्वनि घूमती है। जो चन्द्रमा की भान्ति अमृतमय कला से प्रसारित होता हुआ आनन्द रस उच्छालता है और विचित्र समावेश रस की वृद्धि करता है।

चिदानन्दाम्भोधेरुदयति परा कामलहरी
प्रसूते भावौघं धरति हरते मातृ वपुषः
प्रयातादेवक्यां निजरतजनं पातुमनिशं
महाशक्तिः सैषा जगति जयतात् कृष्ण वपुषा।

शब्दार्थ

चित्	— चित	प्रयाता	— वही रूप प्राप्त हुआ है
आनन्द	— आनन्द के	देवक्याम्	— देवकी भाव को
अम्भोधे	— समुन्द्र	निजरतजनं	— अपने स्वरूप में लगे
उदयति	— उदित हुई	पातुं	— पवित्र
परा कामलहरी	{ परा शक्ति की तरंग	अनिशम्	— नित्य
प्रसूते	— (उसी से पैदा हुई	महाशक्ति	— महाशक्ति
भावौघं	— भाव वर्ग	सैषा	— वही है
धरति	— (वही) धारण करने वालो	जगति	— जगत में
हरति	— हरन करने वाली	जयतात्	— जय जयकार को पहुंची है
मात्र	— माता का	कृष्ण वपुषा	— कृष्ण स्वरूप को
वपुषः	— शरीर (रूप) है		

भावार्थ

चिदानन्द' के समुद्र से परा शक्ति की तरंग उदित होती है उसी

से भाव वर्ग उत्पन्न होते हैं वही धारण और हरण करने वाली माता का स्वभाव (स्वरूप) है जो पवित्र देवकी भाव को प्राप्त हुआ है तथा स्वस्वरूप प्राप्ति में नित्य लगने के लिए महा शक्ति जगत में कृष्ण के रूप में जय जयकार को प्राप्त हुई है।

---

1) Bliss of Supreme Consciousness.

ओं यतो वा इमानि भूतानि जायंते
येन जातानि जीवन्ति
यं प्रयन्ति अभिसंविशन्ति तज्जिज्ञासस्व
तदेव ब्रह्म ।

शब्दार्थ

ओं	— ओं ही	यं प्रयन्ति	— जिसमें प्रवेश करते हैं
यतो	— जिस		
वा	— स्वरूप से	अभिसंविशन्ति	— तथा विश्रान्ति पाते हैं
इमानि	— यह		
भूतानि	— सब चेतन जड़ पदार्थ	तत्	— उसी
		जिज्ञासस्व	— (उसी स्वरूप को) जानने की इच्छा करो
जायते	— उत्पन्न होते हैं		
येन	— जिस से		
जातानि	— उपज कर	तदैव ब्रह्म	— वही ब्रह्म है।
जीवन्ति	— जीते हैं		

भावार्थ

ओं जिस स्वरूप से यह सब जड़ चेतन पदार्थ उत्पन्न होते हैं जिस उपज कर जीते हैं जिसमें प्रवेश करते हैं तथा विश्रान्ति[1] पाते हैं उसी

स्वरूप को जानने की इच्छा करो वही ब्रह्म[2] है।

---

1) that into which they are finally absorbed.
2) Know that to be the eternal Verity—the Absolute

सतो वा इमानि भूतानि जायते सति जातानि जीवन्ति सत्तं प्रयन्ति अभिसंविशन्ति सदेव ब्रह्म।

शब्दार्थ

सतो	— सत	जातानि	— उपजकर
वा	— स्वरूप से	जीवन्ति	— जीते हैं
इमानि	— यह	सतं	— सत्त रूप में ही
भूतानि	— जड़ चेतन पदार्थ	प्रयन्ति	— प्रवेश करते हैं
जायंते	— उत्पन्न होते हैं	अभिसंविशान्ति	— विश्रान्ति पाते हैं
सति	— निश्चय करके	सदेव ब्रह्म	— वही सत्त ब्रह्म[1] स्वरूप है।

भावार्थ

सत् स्वरूप से जड़ चेतन पदार्थं उत्पन्न होते हैं निश्चय करके उपज कर जीते हैं। सत्त स्वरूप में ही प्रवेश करते है तथा विश्रान्ति पाते हैं वह सत ही ब्रह्म स्वरूप है

I Existence which is the highest reality

चितो वा इमानि भूतानि जायंते चिति जातानि जीवन्ति चितं प्रयन्ति अभिसंविशन्ति चिदेव ब्रह्म !

शब्दार्थ

चितो	— चित[1]	जीवन्ति	— जीते हैं
वा	— स्वरूप से	चितं	— चित रूप में
इमानि	— यह	प्रयन्ति	— प्रवेश करते हैं
भूतानि	— सब जड़ चेतन पदार्थ	अभिसंविशन्ति	— विश्रान्ति पाते हैं
जायंते	— उत्पन्न होते हैं		
चिति	— चित रूप में	चिदेव	— चित ही
जातानि	— उपजकर	ब्रह्म	— ब्रह्म का स्वरूप है

भावार्थ

चित्स्वरूप से यह सब जड़ चेतन पदार्थ उत्पन्न होते हैं चित्स्वरूप में उपजकर जीते हैं और चित् स्वरूप में ही प्रवेश करते हैं तथा विश्रान्ति पाते हैं। चित् ही ब्रह्म का स्वरूप है।

1) Consciousness in its initial, unconditioned state.

आनन्दात् खलु इमानि भूतानि जायंते आनन्देन जातानि जीवन्ति
आनन्दं प्रयन्ति अभिसंविशन्ति आनन्दं ब्रह्म !

शब्दार्थ

आनन्दात्	— आनन्द से।	जीवन्ति	— जीते हैं
खलु	— निश्चय करके	आनन्दम्	— आनन्द में
इमानि	— यह	प्रयन्ति	— प्रवेश करते हैं
भूतानि	— सब जड़ चेतन जगत[2]	अभिसंविशन्ति	— विश्रान्ति पाते हैं
जायंते	— उत्पन्न होते हैं		

आनन्देन	— आनन्द में	आनन्दं	— आनन्दं
जातानि	— उपज कर (उत्पन्न होकर)	ब्रह्म	— ब्रह्म है

भावार्थ

आनन्द से यह सब जड़ चेतन जगत उत्पन्न होते हैं आनन्द रूप में ही जीते हैं तथा विश्रान्ति पाते हैं आनन्द ही ब्रह्म हैं ।

---

1) Blissful supreme principle.
2) Sentient & insentient

मतो वा इमानि भूतानि जायंते मयि जातानि जीवन्ति मां प्रयन्ति अभिसंविशन्ति अहमेव ब्रह्म ।

शब्दार्थ

मतो	— मुझ[1] (अहं रूप)	जीवन्ति	— जीते हैं
वा	— स्वरूप से	मां	— मुझ में
इमानि	— यह	प्रयन्ति	— प्रवेश करते हैं
भूतानि	— जड़ चेतन पदार्थ	अभिसंविशन्ति	— विश्रान्ति पाते हैं
जायंते	— उत्पन्न होते हैं		
मयि	— मुझ में	अहमेव	— मैं ही
जातानि	— उपजकर	ब्रह्म	— ब्रह्म हूं[2]

अहं स्वरूप से यह जड़ चेतन पदार्थ उत्पन्न होते हैं अहं में जीते हैं अहं में प्रवेश करते हैं तथा विश्रान्ति पाते हैं । मैं ही ब्रह्म हूं ।

---

1) The pure inner self or the experiencing subject. I-Consciousness.
2) Highest reality :-

सर्वं जगत स्वदेहं वा¹ स्वानन्द भरितं स्मरेत्
युगपत् स्वामृतेनैव परानन्दमयो भवेत ॥

(V.B.—65)

(एक योगी) यदि सारे जगत की तथा अपने देह को एक साथ अपने ही चिदानन्द से भरा हुआ ध्यान करे तो निश्चल रूप से परानन्द-मय बन जाता है।

1) यहां श्लोक के 'वा' को 'च' समझना है।

(ईश्वर स्वरूप स्वामी लक्ष्मनजू)

उों शन्नो मित्रः। शं वरुणः। शन्नो भव त्वंय यमा। शन्न इन्द्रो ब्रहस्पति। शन्नो विष्णुरुरुक्रमः।

(उों सूर्य कल्याण करे। चन्द्रमा कल्याण करे। नक्षत्र कल्याण करें। इन्द्र और वृहस्पति कल्याण करें। उच्च बलवान विष्णु कल्याण करें।)

नमो ब्रह्मणे। नमो वायवे। नमस्ते वायो। त्वमेव प्रत्यक्षं ब्रह्मासि।

(ब्रह्म को नमस्कार हो। प्राण वायु को नमस्कार हो प्राण वायु आप को नमस्कार हो। आप ही प्रत्यक्ष ब्रह्म हैं।)

त्वामेव प्रत्यक्षं ब्रह्म वदिष्यामि। ऋतं वदिष्यामि। सत्यं वदिष्यामि। तन्मामवतु।

(आप प्रत्यक्ष ब्रह्म का विमंश करता हूं। आप सत्य का विमंश करता हूं। सत्य स्वरूप विश्व का विमंश करता हूं। इसलिए मेरी रक्षा कीजिए।)

तद्वक्तारमवतु । अवतु मामवतु वक्तारं ।
शान्ति:, शांति:, शांति: ।

[इस कहने वाले की रक्षा कीजिए। मुझ उच्चारण करने वाले की रक्षा कीजिए। तीनों कारण शरीरों (स्थूल, सूक्ष्म, कारण) को शान्ति प्राप्त हो]

ऊों सहनाववतु । सहनौ भुनक्तु ।
सह वीर्यं करवावहै । तेजस्विनावधीतमस्तु ।
माविद्वषावहै । शान्ति:, शान्ति: शान्ति: ।

[दोनों (गुरु शिष्य) की रक्षा करो। एक साथ हम दो का भोग हो। हम दोनों का चित्तबल बढ़े। हम दोनों तेजस्वियों का विमर्श किया हुआ हो। हम किसी से द्वेष न करें। स्थूल, सूक्ष्म तथा कारण शरीरों को शान्ति प्राप्त हो।]

ऊों शन्नो मित्र: शंवरुण: । शन्नोऽस्त्वर्यमा ।
शन्न इन्द्रश्चाग्निश्च । शन्नो विष्णुरुरुक्रम: ।

[ऊों भास्कर हमारा कल्याण करे। चन्द्रमा हमारा कल्याण करे। नक्षत्र हमारा कल्याण करे। इन्द्र और तेज हमारा कल्याण करे। बलवान् विष्णु कल्याण करे]

नमो ब्रह्मणे, । नमो वायवे, । नमस्ते वायो ।
त्वमेव प्रत्यक्षं ब्रह्मासि । त्वामेव प्रत्यक्षं ब्रह्म-
अवादिषं । ऋतमवादिषं सत्यमवादिषं ।
तन्मामावीत् । तद्वक्तारमावीत् । आवीन्मामा-
वीत् वक्तारं । शान्ति, शान्ति, शान्ति ।

[ब्रह्म को नमस्कार हो। प्राणवायु को नमस्कार हो। प्राण वायु आप को नमस्कार हो। आप प्रत्यक्ष ब्रह्म हैं। आप प्रत्यक्ष ब्रह्म का विमर्श करता हूं। सत्य परमार्थ का विमर्श करता हूं। सत्य रूप जगत का विमर्श करता हूं। वह मुझ में समावेश करे। इस कहने वाले में समावेश करे। मुझ उच्चारण करने वाले के साथ समावेश करे। तीनों शरीरों को शान्ति हो।]

सहनावतु सहनौ भुनक्तु सह वीर्यं करवावहै।
तेजस्विनाव धीतमस्तु मा विद्विषावहै।
शान्ति, शान्ति, शान्ति।

[(गुरु शिस्य) दोनों की रक्षा करे। हम दोनों का एक साथ भोग हो तथा चित्त तेज बड़े। हम दोनों तेजस्वियों का विमर्श किया हुआ हो। हम किसी से द्वेष न करें। तीनों शरीरों को शान्ति प्राप्त हो।]

आत्म क्रीडा। आत्म रुचिः क्रियावान य।
एष ब्रह्म विविद्वान वरिष्टः। यमेवैष वृणुते
तेन लभ्यस्तस्यैष आत्मा विवृणुते तनुं स्वाम्॥

[आत्म स्वरूप में ही क्रीड़ा करता है। अपने चित्त स्वरूप में रुचि रखता है। क्रिया शक्ति वाला पुरुष यह ब्रह्म को जानने वाला उत्तम जिस पर अनुग्रह करे उसे ही प्राप्त होता है। यह आत्मा उसी पुरुष को अपना स्वरूप प्रकट करता है।]

—: o :—

श्री स्वामी विद्याधर स्वामी महादेव शैव आश्रम

विवेक विहार, पलोरा, जम्मू

1/170

क्रम सं० 1848

तिथि 9.7.06

श्रीमान/श्रीमती R.L. Bhat, Laxmi Vihar

Bhori

जी से रुपये One hundred only

मासिक चन्दा/उपहार सधन्यवाद प्राप्त किये ।

रु० 100/-

कोषाध्यक्ष

पूतं स्तोम अभिष्टये ।

शुद्ध मन से की गई स्तुति ही इच्छित पदार्थ को देती है ।

—ऋग्वेद